ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०७९ मई २०२२

छुट्टी गर्मी की

₹ २०

गुड़िया की शादी

– विज्ञान व्रत

दादी! दादी!
प्यारी दादी!
करवा दो गुड़िया की शादी।
देखो कितनी बड़ी हो गयी।
भोलेपन की उमर खो गयी।
लेकिन मेरे
संग में रहकर,
अब भी लगती सीधी–सादी।
सज्जन–सा इक ढूँढो लड़का।
हँसमुख–सा हो अच्छे घर का।
देर नहीं अब
जल्दी ढूँढो,
चाहे करनी पड़े मुनादी।
पढ़ा–लिखा हो सीधा–सच्चा।
सबको लगे शेर का बच्चा।
लेकिन फिर भी
एक शर्त है,
वो पहनेगा केवल खादी।
दादी! दादी!
प्यार दादी!
करवा दो गुड़िया की शादी।

– नोएडा (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

वैशाख	२०७९	वर्ष	४२
मई	२०२२	अंक	११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

इस माह अपनी बात का आरंभ एक प्रसंग से करता हूँ। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में गुरु का महत्व सर्वाधिक है और गुरु की बात शिष्य के लिए बिना किसी ना–नुकुर के मानने योग्य ही होती है। आज से लगभग एक हजार वर्ष पुरानी बात है एक ऐसे ही महान गुरु ने अपने शिष्य को एक मंत्र दिया। दीक्षा के समय मिलने वाला यह मंत्र, गुरु शिष्य को कान में कहता है और यह गुरु मंत्र शिष्य द्वारा हमेशा गुप्त यानि छुपाकर रखने को कहा जाता है। इस महान गुरु का यह शिष्य भी महान ही था। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि यह गुरुमंत्र उसे सारे पापों से मुक्त कर देगा तो वह एक ऊँचे टीले पर जा चढ़ा और जोर–जोर से वह मंत्र बोलने लगा जिसे सारे लोग उसे सुन लें। साथी शिष्यों ने रोका– ''अरे! यह क्या? यह गोपनीय मंत्र है। किसी को भी बताना नहीं है, ऐसी गुरु की आज्ञा है। सबको बताओगे तो तुम नर्क में जाओगे।'' शिष्य का उत्तर था– ''यदि मुझे अकेले को नर्क में जाना पड़े फिर भी इस मंत्र के द्वारा सारे लोग पापों से मुक्त हो जाएँ तो मुझे यह करना ही चाहिए।''

बच्चो! ये महान शिष्य थे **'स्वामी रामानुजाचार्य'** और उनके गुरु ने उन्हें १८ बार लौटा दिया था तब उन्हें दीक्षा मिल सकी और यह तब मंत्र मिल पाया था।

गुरु, शिष्य, पापों से मुक्ति, स्वर्ग–नरक ये शब्द हमारे शास्त्रों में प्राय आते हैं, अलग–अलग स्तर पर समझने योग्य इनके अर्थ भी भिन्न–भिन्न हैं, लेकिन यह प्रसंग हमें सिखाता है कि **अपने हित से बढ़कर समाज का हित सोचने और करने वाला ही महान बनता है।** स्वामी रामानुजाचार्य आज एक हजार वर्ष बाद भी जगद्गुरु के रूप में सारे विश्व में भगवान जैसे पूजे जाते हैं।

एक बात और, वे महान थे इसलिए ऐसा कर सके ऐसा नहीं। हम सामान्य लोगों के सामने उनका आदर्श है। हम अपने–अपने स्तर पर ऐसा सोचें, ऐसा करें तो हमारा समाज एक सुंदर एवं सुखी समाज बन सकता है।

अपना हित और स्वार्थ ले, जीते सारे लोग।
लेकिन परहित ही उचित, जीवन का उपयोग।।

देश में सहस्राब्दि पर्व मनाया जा रहा है महान संत रामानुजाचार्य जी का। उनकी जयंती है इसी माह ५वीं दिनांक को। इस दिन तमिल के चिथिराई महीने में थिरूवाथिरा नक्षत्र होने से यह जयंती मनाई जाएगी। आइए, उनके बचपन से यह सीख ले अपने बचपन को सुन्दर बनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- नया नौ दिन पुराना सौ दिन -हरिन्दर सिंह गोगना ०५
- वफादार की तलाश -शैलेन्द्र सरस्वती १०
- अटकी सुई -निश्चल २०
- सच्चा मित्र -बलदाऊराम साहू ४२

लोक कथा

- अम्माजी का पानदान -सुधारानी तैलंग २६

छोटी कहानी

- दादी का हैण्डपम्प -नीलम राकेश ०७
- उल्लू के उल्लू -श्यामनारायण श्रीवास्तव १६
- मधुमक्खी का छत्ता -डॉ. अलका जैन २३

लघुकथा

- संस्कार -मीरा जैन ३१

आलेख

- स्वामी रामानुजाचार्य -सुशील सरित १८
- चुस्त और फुर्तीली मक्खी -कुसुम अग्रवाल ३६

कविता

- गुड़िया की शादी -विज्ञान व्रत ०२
- बढ़िया बहुत पसीना -रावेन्द्र कुमार 'रवि' ०८
- सीता की बाल लीला -गोपाल माहेश्वरी १४
- चाँद के बाराती -गोपेन्द्र कुमार सिंहा 'गौतम' ३४
- ऊँट और सियार -अरविन्द कुमार साहू ४८
- सेल्फी का चक्कर -इन्द्रजीत कौशिक ५१

स्तंभ

- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी १९
- छः अंगुल मुस्कान २४
- शिशु गीत -विष्णुकांत पाण्डेय २५
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३२
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - ३५
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३८
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी ४०
- पुस्तक परिचय - ४६
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी ४७

चित्रकथा

- उलझन -संकेत गोस्वामी ०९
- अनोखा मुर्गा -देवांशु वत्स १३
- हँसने का कारण -देवांशु वत्स ५०

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ते क्रम में -देवांशु वत्स १७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

नया नौ दिन पुराना सौ दिन

– हरिन्दर सिंह गोगना

गर्मी का मौसम शुरु हो चुका था। घर में नया फ्रिज आया तो परिवार के सब सदस्य खुशी से झूमने लगे। लेकिन फ्रिज के समीप ही पड़ा मटका कुछ उदास हो गया। आज तक घर में उसका जो सम्मान था वह घटता दिख रहा था।

क्योंकि जब से फ्रिज आया था परिवार के सब लोग उसी के आसपास चक्कर लगाते रहते थे। कोई ठंडा पानी पीने लगता तो कोई जम रही आईसक्रीम को बार–बार निहारता रहता। बच्चे विद्यालय से आते ही कंधों से बस्ते उताकर फ्रिज की ओर भागते। फिर ठंडे पानी की बोतलें गट गटकर पी जाते और फ्रिज की प्रशंसा करते कहते– ''वाह! मजा आ गया! कलेजे में ठंडक पड़ गई।''

एक कोने में पड़े पुराने मटके को जैसे सब भूल चुके थे। अब तो कोई उसे साफ भी नहीं करता था। मटका अपनी उपेक्षा देख और नीचे को झुक जाता।

एक दिन फ्रिज को मटके पर हँसी आई और उसने घमंड में मटके से कहा– ''लगता है, अब तुम्हारी यहाँ कोई आवश्यकता नहीं। अरे भाई, यह नया जमाना है, मशीनी युग है। हर चीज बिजली से चलती है। मेरे में वह सब गुण हैं जो मनुष्य को चाहिए। तभी तो मेरा कुछ दिनों में ही सम्मान होने लगा। एक तुम हो जिसका वर्षों से इस घर से नाता होते हुए भी कोई प्रतिष्ठा नहीं रही।'' मटका शांत होकर फ्रिज की व्यंग्य भरी बातें सुनता रह गया।

एक दिन गाँव में बिजली चली गई। पता लगा कि तकनीकी खराबी होने के कारण से पूरे गाँव में पाँच दिन बिजली नहीं आने वाली। भीषण गर्मी के दिन थे। ऐसी अवस्था में हर किसी को प्यास लगना स्वाभाविक बात थी। फ्रिज के पानी की आदत पड़ने पर अब हर कोई ठंडे पानी को तरस रहा था।

तभी परिवार के दादाजी ने कहा– ''इससे तो अच्छा अपना यह पुराना मटका है। हम लोग तो फ्रिज के आने के बाद इसे भूल ही गए थे। कितने वर्ष इसने हमें ठंडा व ताजा पानी पिलाया। चलो इसे साफ करते हैं और पानी से भरते हैं। फिर सारा दिन इसका ताजा व ठंडा पानी पीने को मिलेगा।''

फिर ताईजी उसमें जमी काई को साफ करने लगी। बच्चे नल से पानी भर लाए और साफ मटके में भरने लगे। शाम को काम से थके पुरुष लोग घर लौटे तो सबसे पहले मटके की ओर बढ़े और जी भर कर ठंडा व ताजा पानी पीया।

बच्चे भी अब भरी दोपहरी में विद्यालय से घर आते तो सर्वप्रथम मटके के आस–पास हो जाते और अपनी प्यास बुझाते कहते– ''वाह! इसका पानी कितना स्वादु है और ताजा है।''

बच्चों की बातें सुनकर दादाजी बोले– ''बच्चो! इसलिए तो कहते हैं कि नया नौ दिन पुराना सौ दिन। देसी चीजें कभी धोखा नहीं देतीं। तुम्हें मटके की और कई विशेषताएँ बताता हूँ।'' बच्चे अपने दादाजी के पास बैठ गए और बातें सुनने लगे।

''मटके का पानी स्वास्थ्य के लिए गुणकारी है। इसके पीते रहने से रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। पहले जब फ्रिज नहीं था तो लोग मटके का पानी ही पीते थे। बल्कि आज भी फ्रिज होने पर बहुत से लोग अच्छे स्वास्थ्य के लिए मटके का पानी ही पीते हैं। मटके की दीवारों पर बहुत सारे छोटे–छोटे छेद होते हैं और इन छेदों से हमेशा पानी रिसता रहता है। इसी कारण से मटके की सतह पर हमेशा गीलापन बना रहता है। जिससे पानी ठंडा व ताजा रहता है। इसीलिए पुराने लोग मटके के पानी का महत्व जानते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए ही नहीं पर्यावरण के लिए भी अच्छा होता है। फ्रिज का पानी अच्छा तो लगता है किन्तु यह कई बीमारियों को न्यौता भी देता है। जैसे हड्डियों को कमजोर करता हैं व गला खराब करता है।''

''हाँ दादा जी! फ्रिज का पानी पीने से कितने दिन मेरा गला खराब रहा। ठीक से खाना भी न खाया गया। कड़वी दवा लेनी पड़ी सो अलग।'' एक बच्चे ने झट से कहा तो दूसरा बोला– ''मेरे अध्यापक जी भी आज समझा रहे थे कि मटके का पानी स्वास्थ्य के लिए कितना गुणकारी है। हमें फ्रिज के पानी का कम ही सेवन करना चाहिए।''

''दादाजी! आपको तो बहुत जानकारी है?'' एक बच्चे ने दादा जी से प्रश्न किया तो वे बोले– ''मैं हमेशा अच्छी पुस्तकें पढ़ता हूँ। उसी में से मुझे ज्ञान मिलता है। तुम लोग भी गाँव में खुल चुके नए वाचनालय में जाकर अच्छी पुस्तकें पढ़ा करो।''

परिवार वालों की बात सुनकर आज फ्रिज का सिर लज्जा से झुक गया था। उसे अनुभव हुआ कि अधिक घमंड कभी न कभी अवश्य टूटता है। उसने मटके से क्षमा माँगी तो अपने स्वभाव की तरह शीतल मटके ने उसे मुस्करा कर क्षमा कर दिया।

– पटियाला (पंजाब)

सुविचार

पुस्तक

पुस्तक सच्ची मित्र है, सदा राखिये प्रीत।
पुष्ट करे जो चित्त मन, भरा ज्ञान नवनीत।।

छोटी कहानी

दादी का हैंडपंप

– नीलम राकेश

बूढ़ी अम्मा सड़क किनारे लगे हैंडपंप के पास आकर बैठ गई थीं। बहुत ही प्यार से वह उस सूखे नलकूप को निहार रही थीं। एक समय था जब यह नल झर–झर पानी देता था। ''तू क्यों सूख गया रे?'' बूढ़ी अम्मा ने हैंडपंप से पूछा।

''अरे दादी! आप किससे बात कर रही हैं?'' नन्ही गुड़िया सड़क पर अपनी साइकिल रोककर खड़ी हो गई। ''गुड़िया सड़क पर से हटो अभी गाड़ी आ जाएगी।'' चिंतित सी अम्मा बोलीं।

गुड़िया अम्मा के पास आकर खड़ी हो गई। ''अच्छा आप बताइए, यहाँ तो कोई नहीं है, आप किससे बात कर रही थीं?''

तब तक पीछे से तेजी से चलते हुए गुड़िया के पिता वर्मा जी भी वहाँ पहुँच गए।

''नमस्ते अम्मा! गुड़िया आपको तंग तो नहीं कर रही थी?'' हाथ जोड़कर वर्मा जी बोले।

''अरे नहीं, ये तो बहुत प्यारी बिटिया है।'' प्यार से गुड़िया को देखते हुए अम्मा बोलीं।

''आप मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं दे रही हैं दादी?'' कमर पर हाथ रखकर गुड़िया ने पूछा।

''अरे बिटिया! इसी हैंडपंप से बात कर रहे थे।'' हाथ के संकेत से नलकूप दिखाते हुए अम्मा बोलीं।

''हैंडपंप से भी कोई बात करता है क्या?'' गुड़िया खिलखिलाकर हँसने लगी।

''क्या करें बिटिया! तंग कर रखा है इसने, पानी ही नहीं देता है।'' दादी गुस्से में नलकूप को देखते हुए बोलीं।

''गलती इस बिचारे हैंडपंप की नहीं है अम्मा!'' वर्मा जी बोले।

''तो फिर किसकी गलती है बापू?'' गुड़िया ने पूछा। ''हम मनुष्य हैं बेटा! इस हैंडपंप के पीछे ये जो

पूरी कॉलोनी देख रही हो, पहले यहाँ पर बहुत–बहुत सारे पेड़ थे, बाग था पूरा।'' वे बोले।

''तो फिर वो बाग कहाँ गया?'' चकित सी गुड़िया कंक्रीट के उस जंगल को देख रही थी।

''बिल्डर ने वो बाग खरीद लिया और उस जमीन पर लगे सारे पेड़ कटवाकर ये मकान बना दिए।'' पिताजी ने उत्तर दिया।

अम्मा गंभीरता से बोलीं, ''मकान की तो सबको आवश्यकता रहती है ना। उस बिल्डर को भी तो चार पैसे कमाने थे। तुम सबको भी रहने को घर चाहिए। इसलिए मकान तो बनने ही थे।''

आश्चर्य गुड़िया के चेहरे पर पसरा हुआ था, ''पिताजी! हम तो हैंडपंप की बात कर रहे थे न? ये 'बाग' बीच में कहाँ से आ गया?''

''तुम तो अभी बहुत छोटी बच्ची हो बेटी! पर सच तो यह है कि हम बड़े भी इन पेड़ों के महत्व को नहीं समझ पा रहे हैं।'' बेटी के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए वर्मा जी बोले।

कुछ पल ठहरकर वर्मा जी फिर बोले– ''अम्मा! जानती हैं, ये जो पेड़ है न, ये वर्षा को अपनी ओर खींचते हैं और इन पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बाँधकर रखती हैं। अब जब पेड़ नहीं हैं, तो यहाँ पर वर्षा की मात्रा कम हो गई है। उसी का परिणाम है धरती के नीचे जल का स्तर कम हो गया है। इस बेचारे हैंडपंप का जो पाइप है, वह जहाँ तक पहुँच रहा है, जल का स्तर उससे नीचे है, इसलिए वो पानी ऊपर नहीं खींच पा रहा।'' पिताजी ने अम्मा को बताया।

''अच्छा–अच्छा, अब समझी इसलिए सारे बड़े लोग पेड़ लगाने को बोलते हैं।'' गुड़िया झट से बोली। ''हाँ बेटी!'' ''इन बड़े लोगों की बातें हम लोग नहीं समझ पाते थे पिताजी! लेकिन आज मैं समझ गई हूँ। अब मैं अपने साथियों को अच्छे से बता दूँगी। फिर हम सब मिलकर अपने विद्यालय में और अपनी कॉलोनी में पेड़ लगाएँगे। आप लोग भी हमारे साथ पेड़ लगाएँगे ना पिताजी?'' चहकती हुई सी गुड़िया ने पूछा। अवश्य लगाएँगे पर पहले यहाँ से घर तो चलें।'' पिता ने गुड़िया को उसकी साइकिल पर बैठा दिया, और वह दादी को टाटा करते हुए साइकिल चलाने लगी।

– लखनऊ (उ. प्र.)

कविता

बढ़िया बहुत पसीना

– रावेन्द्र कुमार रवि – खटीमा (उत्तराखण्ड)

गरमी के मौसम में लगता,
बढ़िया बहुत पसीना।
जब शरीर का ताप बढ़े यह,
निकल–निकलकर आए।
धीरे–धीरे भाप बने, फिर
शीतलता पहुँचाए।
यह ना आए, तो हो जाए
मुश्किल सबका जीना।
गरमी के मौसम में...
रोमछिद्र में भरी गंदगी,
यह बाहर ले आए।

सदा त्वचा की रक्षा करता,
त्वचा न फटने पाए।
इसको छूकर गरम हवा भी,
ठंडी हो जाए ना।
गरमी के मौसम में...
अगर पसीना ना आए तो,
त्वचा सूख जाती है।
चढ़ती है दिमाग पर गरमी,
तबियत घबराती है।
इसे बुलाने की खातिर तुम,
गट–गट पानी पीना।
गरमी के मौसम में...

उलझन
चित्रकथा-
क्यूं भई, आम किस भाव दे रहे हो?
35 रुपये किलो.
तुम्हारे पास कुल कितने आम हैं?
करीब सत्रह किलो.
ऐसा करो, सारे आम मुझे दे दो.
नहीं दूंगा साब..
नहीं क्यों? मैं रुपये नकद दे रहा हूं..
..अगर सारे आम आपको दे दिए तो मैं शाम तक क्या बेचूंगा?

कहानी

वफादार की तलाश

– शैलेन्द्र सरस्वती

एक किसान के पास सौ बकरियों का एक रेवड़ (झुण्ड) था। किसान के न कोई आगे था, न कोई पीछे। आयु भी काफी हो जाने से बकरियों के रेवड़ को संभालने में उसे काफी परेशानी होती थी। वह उनके पीछे भागते–भागते काफी थक जाता था और खाँसते–खाँसते उसकी काफी बुरी हालत हो जाती थी। आखिर में अपनी हालत से तंग आकर किसान किसी ऐसे योग्य प्राणी की तलाश में निकल पड़ा जो पूरी मेहनत और ईमानदारी से उसकी बकरियों को संभाल सकें। रास्ते में चलते–चलते किसान सबसे पहले एक भालू से मिला किसान ने भालू से कहा–

''भालू रे भालू! खाने को दूँ आलू!
मेरी बकरियों को गर तू ले संभाल,
शहद के छत्तों से भी, कर दूँ माला माल।''

आलू और शहद का नाम सुनकर भालू के मुँह में पानी आ गया। उसने तुरंत किसान का रेवड़ संभालने की हामी भर दी। किसान ने कहा– ''ठीक है, लेकिन तुम मेरी बकरियों को पुकारोगे कैसे ? जरा बतलाना।'' भालू ने गले को खँखारा और अपनी भारी–भरकम आवाज में गुर्राया। ऐसी डरावनी आवाज सुन किसान का मुँह लटक गया। किसान ने भालू से कहा– ''तेरी डरावनी आवाज सुनकर तो मेरी बकरियों का बैठे–बैठे ही दम निकल जाएगा। ना भाई! मैं तुम्हें काम पर नहीं रख सकता।'' इतना कहकर किसान आगे बढ़ गया।

रास्ते में काफी चलने के बाद किसान की भेंट एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने किसान से राम–राम की तो किसान ने कहा–

''गीदड़ ए गीदड़!
मेरे रेवड़ को गर, तू ले संभाल,
रोज दूँ खाने को मुर्गी,
संग में रोटी और दाल।''

यह सुन गीदड़ के मुँह में भी पानी भर आया। वह सोचने लगा कि जंगल में रोज खाने की तलाश में इधर–उधर भटकना पड़ता है। कभी–कभी ही कोई छोटा–मोटा शिकार बड़ी मुश्किल से हाथ लगता है। वर्ना तो शेर और चीतों की छोड़ी हुई जूठन से ही काम चलाना पड़ता है। रेवड़ की चौकीदारी करने से न केवल रोज की भागदौड़ से मुक्ति मिलेगी, खाने की चिंता भी नहीं रहेगी। काफी सोच–विचार के बाद गीदड़ ने रेवड़ संभालने के लिए हामी भर दी।

किसान ने कहा– ''ठीक है, लेकिन जरा यह तो बताओ कि तुम मेरी नाजुक बकरियों को पुकारोगे कैसे ?''

इस पर गीदड़– ''हुआं, हुआं।'' करता चिल्लाया तो उसकी तीखी, ठंडी आवाज सुन किसान का शरीर भी काँप उठा।

''रहने दो जी, तुम्हारी आवाज तो मुर्दों को भी

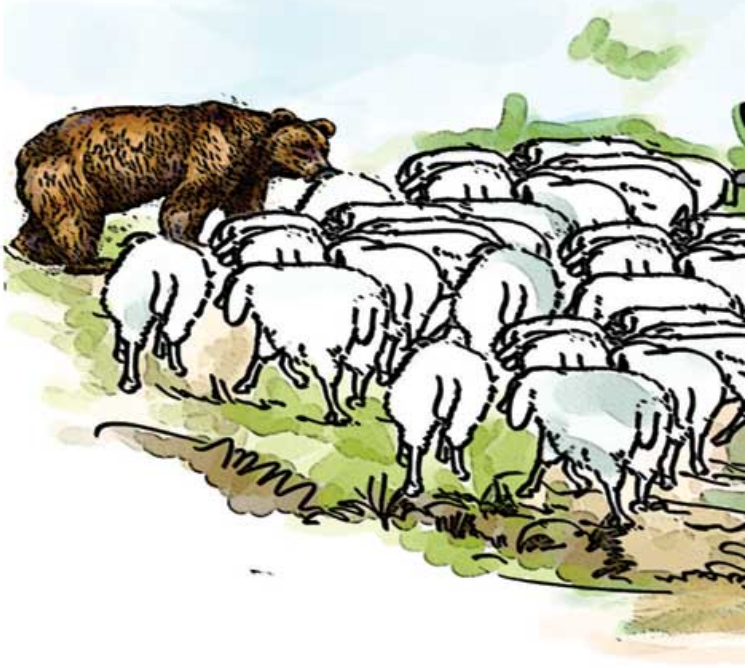

डरा दे। मेरी बकरियों को तुम्हारी आवाज सुनकर कहीं लकवा न मार जाए। मुझे नहीं चाहिए तुम्हारे जैसा चौकीदार।'' इतना कहकर किसान झुंझलाहट में पैर पटकता हुआ वहाँ से चल दिया।

आखिर में जंगल के अंतिम छोर पर किसान की भेंट एक कुत्ते और लोमड़ी से हुई। किसान ने पहले कुत्ते से कहा–

''कुत्ते ए कुत्ते!
मारूँ तुम्हें ना जूते।
मेरे रेवड़ को,
गर तू ले संभाल,
खाने को दूँ हड्डी,
बेटे–सा लूँ मान।''

कुत्ते ने पूँछ हिलाते हुए काम के लिए तुरंत हामी भर दी। किसान ने कहा– ''अब बताओ! मेरी बकरियों को पुकारने के लिए तुम्हारे पास कैसी आवाज है?'' इस पर कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ जोर–जोर से भौंकने लगा किसान ने मुँह बनाते हुए कहा– ''ना, ना, यह भी कोई आवाज हुई। माना अधिक डरावनी नहीं है लेकिन ऐसी आवाज सुनकर तो मेरी बकरियाँ समय–समय पर चौंक पड़ेगी।''

कुत्ते ने निराश न होते हुए किसान को समझाया, ''देखिए महोदय! किसी भी रेवड़ को संभालने के लिए प्यार के साथ अनुशासन की भी काफी आवश्यकता होती है। ऐसे में न केवल मैं उनके साथ खेलूँगा बल्कि उनकी लापरवाही पर भौंक–भौंककर उन्हें सचेत भी करूँगा।''

लेकिन किसान को कुत्ते की बात जँची नहीं और उसने लोमड़ी की तरफ मुँह करते हुए कहा–

''लोमड़ी ए लोमड़ी!
लगती तेज तू खोपड़ी
मेरी रेवड़ को गर तू ले संभाल,
रोज तुम्हें दूँ मछलियाँ,
खाने में भर थाल।''

इस पर लोमड़ी ने मासूमियत से कहा– ''माँसाहार की बात न करें महोदय! वह तो मैंने काफी पहले ही छोड़ दिया है। अब तो मैं पूर्ण रूप से शाकाहारी हूँ और नियमित रूप से प्रतिदिन २ घंटे योगाभ्यास भी करती हूँ। मेरा चुस्त और छरहरा बदन इसी का परिणाम है। रही आपकी बकरियों को पुकारने की बात तो मैं उन्हें यूँ पुकारूँगी–

आओ मेरी प्यारी बकरियों!
मेरी भोली, न्यारी बकरियों,
मैं लोमड़ी तुम्हें बुलाऊँ,
मुश्किल हो तो मैं सुलझाऊँ।''

किसान का दिल लोमड़ी की बनावटी बातों और उसका मीठा गीत सुनकर बाग–बाग हो उठा। उसने ईमानदार कुत्ते की अनदेखी करते हुए धूर्त

लोमड़ी को तुरंत काम पर रख लिया। पहले ही दिन रेवड़ी की देखभाल के बहाने धूर्त लोमड़ी ने अवसर पाकर एक बकरी को दबोचा और देखते ही देखते उसे चट कर गई। शाम को बाड़े में लौटने के बाद किसान ने जब अपनी बकरियाँ गिनी तो एक कम होने पर उसने उसका कारण लोमड़ी से पूछा तो लोमड़ी ने डरने का नाटक करते हुए कहा कि– ''एक भालू बकरी को उठाकर ले गया।'' किसान ने कहा– ''भालू को मैंने काम नहीं दिया था, लगता है उसने उसी बात का बदला लिया है।''

अगले दिन लोमड़ी ने एकांत पाते ही एक मोटी–ताजी बकरी पर धावा बोला और उसके माँस की जमकर दावत उड़ाई। घर लौटने पर किसान ने गिनने के बाद आज एक बकरी को और कम पाया तो वह लोमड़ी पर चिल्लाया। लोमड़ी ने भोलेपन से रोते हुए कहा– ''मैं क्या करती महोदय! झाड़ियों में छिपे एक गीदड़ ने अचानक से ऐसा धावा बोला कि संभलने का कोई अवसर ही नहीं मिला।''

यह सुनकर किसान ने नरम होते हुए कहा– ''ओह! तो लगता है कि उस गीदड़ ने भी अपना बदला चुकाया है जिसे मैंने काम पर नहीं रखा था।'' किसान ने लोमड़ी को बिना कुछ कहे जाने दिया।

तीसरे दिन लोमड़ी ने रेवड़ की एक अच्छी–खासी बकरी पर अपनी नजरें रखी और जैसे ही उसे अवसर मिला, उसका काम तमाम करके एक झाड़ी की आड़ में उसकी बोटियाँ नोचने लगी। संयोग से खाने में लीन लोमड़ी पर कुत्ते की नजर पड़ गई एक पल में ही कुत्ता सारा माजरा समझ गया और किसान को बुलाने फुर्ती से भागा कुत्ते से सच्चाई सुनकर किसान को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उस समय किसान अपने घर की दीवारी की सफेदी कर रहा था तथा उसके हाथ में पंछा (रंग पोतने का ब्रुश) होती है, जो मूंज की रस्सी से बनाई जाती है, थी। आग–बबूला होता हुआ किसान पंछे को हाथों में लिए कुत्ते के पीछे–पीछे लोमड़ी को मजा चखाने चल दिया।

अचानक कुत्ते के साथ किसान को अपनी ओर आता देख लोमड़ी के होश उड़ गए। किसान ने जब कुत्ते की बात को सच पाया तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने आव देखा न ताव, हाथ का पंजा लोमड़ी की खोपड़ी को चकनाचूर करने के लिए पूरी ताकत से उसकी तरफ फेंका, लेकिन पहले ते ही सचेत हो चुकी लोमड़ी पंछे के हमले से बचती हुई जान हथेली पर लिए भाग खड़ी हुई। लेकिन सफेदी की कुछ बूँदें लोमड़ी की काली झबरीली पूँछ पर पड़ी और पूँछ का वह भाग कुछ सफेद हो गया। कहते हैं तभी से धूर्त लोमड़ी की पूँछ का कुछ भाग सफेद रहता है।

कुत्ते को उसकी ईमानदारी का फल मिला और किसान ने अपनी भूल को मानते हुए उसे अपने रेवड़ का चौकीदार नियुक्त कर दिया। बदले में कुत्ते ने भी यह सिद्ध कर दिखाया कि उसके जैसा ईमानदार और वफादार जानवर मनुष्य जाति के लिए इस धरती पर कोई और हो ही नहीं सकता।

– बीकानेर (राजस्थान)

अनोखा मुर्गा!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

सीता की बाल लीला

– गोपाल माहेश्वरी

ठुमुक-ठुमुक पग रखती डोलें,
डग-मग डग-मग दौड़ें।
होड़ लगाकर दौड़ें सब,
सीता को पीछे छोड़ें।।

श्रुतिकीरति, मांडवी, उर्मिला,
हँसती आँख नचाती।
''दीदी हारी, दीदी हारी''
कहते हुए चिढ़ाती।।

सीता मंद-मंद मुस्काती,
खीज नहीं है आती।
लेकिन यह वह ही जाने,
बहिनों को आप जिताती।।

एक दिवस बगिया में जाकर,
खेल रहीं थीं सारी।
नीली, पीली, लाल, गुलाबी,
घाघरिया जरतारी।।

सुनकर चहक, चकित चिड़ियाएँ,
वाह वाह क्या कहने।
मानव रूप बना परियों-सी,
डोल रहीं थीं बहिनें।।

रंग-रंग के फूलों के वे,
बना-बना कर गहने।
सुंदर साज सिंगार बनाए,
इक-दूजे से पहने।।

दौड़ भाग में सिर की वेणी,
झरझर फूल गिराती।
उन्हें देख खिलते फूलों की,
डाली भी शरमाती।।

खिलखिल हँसतीं दौड़भाग कर,
वे खुशियाँ बिखरातीं।
श्रुतिकीरति सबसे छोटी थी,
जब पीछे रह जाती।।

भाग मांडवी और उर्मिला,
आगे दौड़ लगाती।
पर सीता कर कोई बहाना,
जाने क्यों रुक जाती।।

श्रुतिकीरति तुतलाती पूछे,
''त्यों तुम दोल न पाती।''
काँटा चुभा हाथ पैरों में,
वह तलुआ सहलाती।।

दौड़ो जाओ पकड़ो उनको,
मैं हूँ पीछे आती।
छोटी जब आगे बढ़ जाती,
मंद-मंद मुसकाती।।

कहाँ जनक की फुलबगिया में,
काँटा कोई होता।
पूछे पंछी रंग-बिरंगे 'अरे ओ
मैना तोता।।'

सीता का अपनी बहिनों पर,
देखो नेह अनूठा।
छोटी छूटे ना पीछे लो,
काँटा लगा है झूठा।।

एक दिवस मांडवी सभी से,
अलग अकेली निकली।
सींची गई दूब थी गीली,
अरे! अचानक फिसली।।

दीदी! दीदी! बड़े जोर से,
रोते वह चिल्लाई।
सबसे देखा दौड़ के सबसे
पहले सीता आई।।

कितना तेज दौड़ती सीता,
पोल खुल गई भाई।
झूठमूट फिसली थी, उर्मी
ने थी जुगत सिखाई।।

बोलीं तीनों बहनें जाकर,
'दीदी! झूठ बनाती।
सदा हारती जानबूझकर,
झूठा हमें जिताती।।'

'हम चाहें तुम बनो सहेली,
क्यों मैया बन जाती?'
उर्मिल लगी गुदगुदी करने,
हँसती और हँसाती।।

इसी तरह प्रतिदिन होते कुछ,
नए खेल और बातें।
सीता संग बहिनों के बचपन,
के दिन बड़े सुहाते।।

सीता के ऐसे स्वभाव से,
मैया थी हरषाती।
सच्चे मन की झूठी सीता,
कह कर यही चिढ़ाती।।

'किसी बहुत पक्के सच्चे से,
तेरा ब्याह करूँगी।'
'नहीं नहीं! अपना दूल्हा माँ!
मैं तो आप वरूँगी।।'

क्या विवाह का मतलब जाने,
वह छोटी-सी बच्ची।
'अच्छा बाबा! यही करेंगे,'
देकर बोली बुच्ची।।

– इन्दौर (म. प्र.)

उर्मिला, मांडवी, श्रुतिकीर्ति
सीता की छोटी बहनें थीं।

उल्लू के उल्लू

– श्याम नारायण श्रीवास्तव

कहानी तब की है जब कोरोना के कारण अधिकतर शहरों में लॉक डाउन चल रहा था। आदमियों को बाहर निकलना मना था। गाँव में तालाब के किनारे वाले बड़े बाग में खूब फल लगे थे। कुछ कच्चे, कुछ अधपके और कुछ पक कर जमीन में भी गिरे हुए थे। किन्तु इन फलों को कोई खाने वाला नहीं था। बच्चे–बूढ़े–जवान सब कोरोना के भय से घर में छिपे थे। प्रकृति की गोद में स्वतंत्र थे तो केवल पशु–पक्षी उस बाग में पेड़ों की शाखाओं पर तरह–तरह की चिड़ियों का बसेरा था।

एक दिन बाहर बहुत सुहावना मौसम था। आसमान में हल्के बादल छाये हुए थे। शाम का समय था लगभग अँधेरा हो गया था। अधिकतर पक्षी वापस अपने नीड़ में आ चुके थे। एक बड़े आम के वृक्ष की दो डाल पर दो समूह में कुछ चिड़ियाँ बैठी थीं।

तभी एक ने कहा– ''यदि तुम्हारे डाल से एक चिड़िया मेरे समूह में आ जाए तो हम तुमसे दो गुने हो जाएँगे।''

सामने वाली डाल से एक चिड़िया ने उत्तर दिया– ''हाँ, और यदि तुम्हारी डाल पर बैठी चिड़ियों में से एक मेरे समूह में आ जाती तो हम दोनों बराबर हो जाते।''

ऐसे ही कुछ बातचीत एक और डाल पर हो रही थी। वहाँ पर कुछ तोते दो समूह में बैठे थे। जिसमें एक समूह के तोते ने कहा– ''यदि तुम्हारे में से एक तोता मेरे समूह में आ जाता तो हम तुमसे तीन गुना हो जाते।''

तभी यहाँ भी समानता की बात करते हुए दूसरी डाल के तोते ने बहुत सरलता से कहा– ''हाँ और यदि तुम्हारे डाल से मेरे समूह में एक तोता आ जाता तो हम दोनों का समूह बराबर हो जाता।''

चिड़ियों के बीच यह गजब पहेली थी। उसी पेड़ की एक डाल पर अभी–अभी आकर एक उल्लू बैठा था। वह बड़े ध्यान से सबकी बातें सुन रहा था। लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। तभी उसका दूसरा साथी आ गया। उसने अपने साथी उल्लू को सारी बात बताई। बात उसके भी समझ में नहीं आई। दूसरे साथी ने कहा– ''चुपचाप सुनो! अभी वहीं से उत्तर भी आएगा।''

क्या आप बता सकती हो माँ? ''उन समूहों में किस डाल पर कितनी चिड़ियाँ बैठी हैं?'' पेड़ के तने की एक 'कोटर' में बैठा गिलहरी का बच्चा अपनी माँ से पूछ रहा था।

तो गिलहरी ने कहा– है तो बड़ी रोचक पहेली। चलो मैं तुम्हें बताती हूँ। ध्यान से सुनो। ''पहली डाल पर आमने–सामने बैठी चिड़ियों की संख्या पाँच और सात है। यदि पाँच से सात वाले समूह में एक चिड़िया जाएगी तो संख्या चार और आठ हो जाएगी अर्थात एक से दूसरी दोगुनी और यदि सात से पाँच में एक चिड़िया जाएगी तो छ:–छ: हो जाएँगी अर्थात दोनों बराबर।'' ''वाह माँ!'' गिलहरी के बच्चे का चेहरा प्रसन्नता से भर गया।

तभी माँ ने कहा– ''इसी प्रकार दूसरी डाल पर आमने–सामने दो समूहों में बैठे तोते तीन और पाँच हैं। इसमें यदि तीन से पाँच वाले समूह में एक तोता जाएगा तो दो और छ: हो जायेंगे अर्थात तिगुना और पाँच में से तीन के समूह में एक तोता जाएगा तो चार–चार हो जाएँगे। अर्थात दोनों बराबर हो जाएँगे।'' उल्लू भी दोनों की बात ध्यान से सुन रहा था। उसके दूसरे साथी ने कहा– ''वाह! ये लोग तो बहुत बुद्धिमान हैं, बस हम ही लोग रह गए उल्लू के उल्लू।''

– सुलतानपुर
(उ. प्र.)

बढ़ता क्रम 07

देवांशु वत्स

1. दस से पहले।
2. नाव, पोत।
3. स्थिति, हालत, दशा।
4. एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक।
5. मल्लाह, मांझी।
6. घर-बाहर का काम-धाम करने वाला

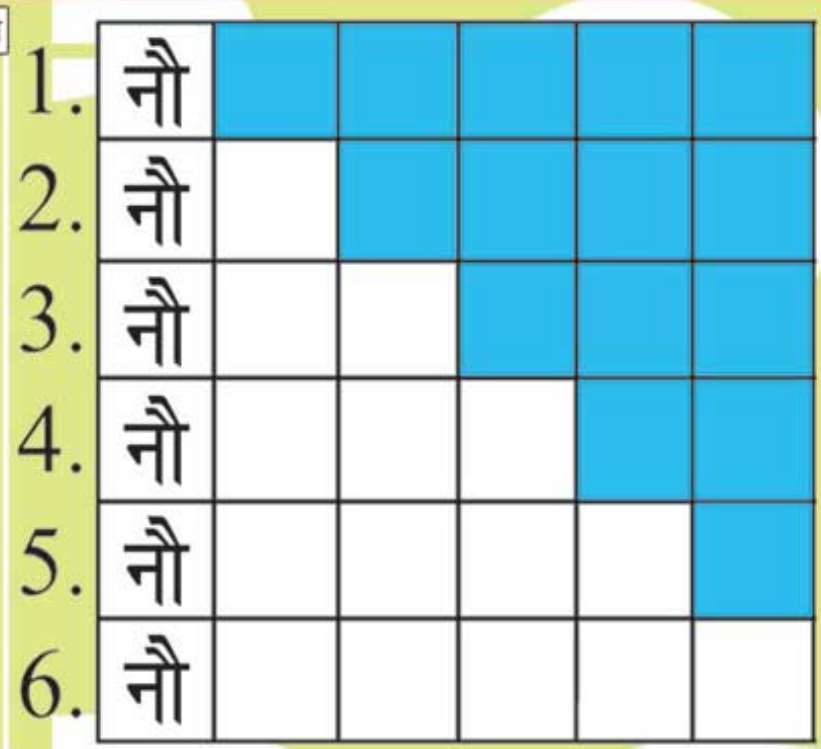

उत्तर: 1. नौ, 2. नौका, 3. नौबत, 4. नौसादर, 5. नौकरिया, 6. नौकर-चाकर।

स्वामी रामानुजाचार्य–सुधारवादी संत

– सुशील 'सरित'

भारत में संतों की एक लम्बी परम्परा चली आ रही है। इसी शृंखला में समय–समय पर कुछ ऐसे भी संत हुए हैं जिनका दृष्टिकोण पूर्णतया सुधारवादी रहा। ऐसे सुधारवादी संतों में संत चोखामेला, संत नारायण गुरु, संत रामानुज, संत नन्दानार, संत रविदास, संत रामलिंग स्वामीगल, संत थिरूप्पानाइवार एवं संत कबीर विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन आठ विशिष्ट सुधारवादी संतों में संत रामानुजाचार्य को वैष्णव भक्ति परम्परा का स्तम्भ माना जाता है।

दक्षिण भारत के इस महान संत को उनके श्रद्धालु शेषनाग का अवतार मानते हैं और उनके प्रमुख शिष्यों को शंख, चक्र, गदा एवं पद्म का मानवीय स्वरूप माना जाता है।

पेराम्बूर में केशव आचार्य एवं भूमिदेवी के घर जन्में रामानुज की शिक्षा कांजीवरम् में हुई और वहीं उन्होंने वैष्णव उपासना को अपना जीवन आदर्श मानकर साधना प्रारम्भ की। शीघ्र ही उनके प्रवचन लोकप्रिय होने लगे। कुछ समय बाद वे श्री रंगम् चले गए। और वहाँ रंगनाथ के रूप में श्री विष्णु की पूजा–उपासना प्रारम्भ की। वहाँ उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की और भारत के अन्य नगरों का भी भ्रमण किया।

इसी मध्य वैष्णव एवं शैव मतावलम्बियों के बीच मतभेद उग्र होने लगे और कभी–कभी हिंसक रूप भी लेने लगे। श्री रंगम् का तत्कालीन शासक चोल राजवंश का कुलूथुंगा शैव मतानुयायी था। उसने सभी स्थानीय ब्राह्मण समुदाय को शैव मत में दीक्षित होने का शासनादेश दे डाला।

रामानुज ने जब उनकी आज्ञा की अवहेलना की तो उन्होंने रामानुज को गिरफ्तार करने के लिए सशस्त्र सैनिक भेजे। रामानुज अपने शिष्यों के सहयोग से बच कर निकल गए और मैसूर के जैन सम्प्रदाय मतावलम्बियों के यहाँ शरण ली। मैसूर में उस समय होयसेला राजवंश के राजा भट्टीदेवा का शासन था।

किंवदन्ति है कि राजा की एक मात्र पुत्री पर ब्रह्म राक्षस का साया था। तत्कालीन वैद्यों एवं संत महात्माओं के प्रयत्न असफल हो चुके थे। रामानुज के पास भी यह समाचार पहुँचा और रामानुज ने जाकर राजा की पुत्री को उस ब्रह्म राक्षस से मुक्ति दिलवायी।

रामानुज के इस अनुग्रह से प्रभावित होकर राजा वैष्णव पंथ के अनुयायी हो गए। रामानुज वहाँ बीस वर्ष तक रहे। उनके हजारों अनुयायी हो गए। उधर श्री रंगम के राजा कुलूथुंगा को लगा कि रामानुज ने देह त्याग दी है।

इस पर रामानुज के अनुयायियों ने उन्हें श्री रंगम् वापस आने के लिए प्रार्थना की। इधर उनके मैसूर के शिष्य उनका वियोग सहन करने को तैयार नहीं थे। रामानुज ने विचार कर इस समस्या का एक व्यावहरिक समाधान निकाला।

उन्होंने मेलकोटा में ही थिरूनारेयनपुरम् में एक विशाल मंदिर बनवाया।

इस मंदिर में सम्पथकुमारन (श्री विष्णु का ही एक रूप) के साथ उन्होंने अपनी प्रतिमा भी रखवायी ताकि उनके शिष्य उनका अभाव न अनुभव कर सकें और श्रीरंगम् चले गए।

वहाँ उनका भरपूर स्वागत हुआ। वे वहाँ तीस वर्ष रहे और एक सौ बीस वर्ष की आयु में भक्ति की सुधारवादी परम्परा को गति देकर देह त्याग दी।

– आगरा (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

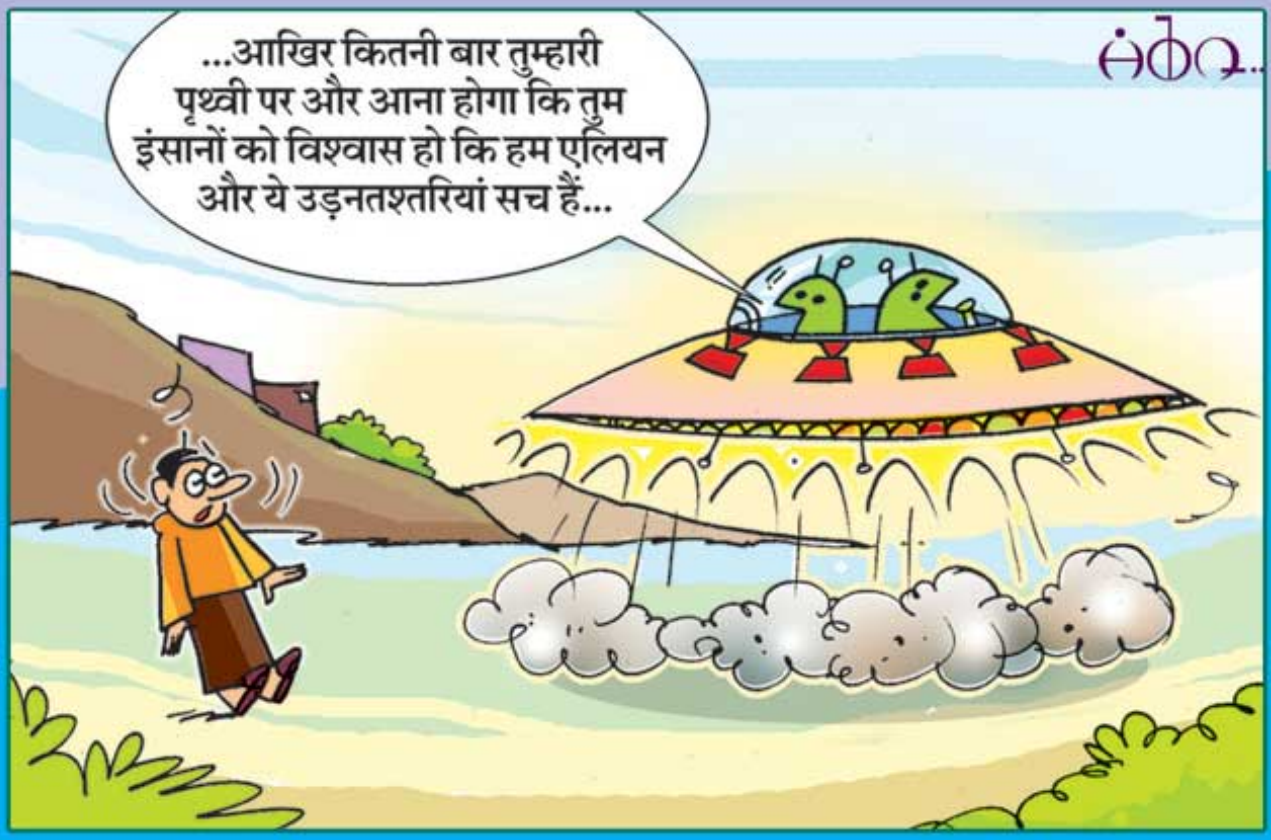

अटकी सुई

– निश्चल

''अरे! अभी तक चार ही बजे हैं।'' सोनू जो अभी-अभी खेलकर लौटा था। बैठक में लगी घड़ी देखकर बोला।

''अरे नहीं! चार क्यों, अब तो लगभग छः बज रहे होंगे। अभी थोड़ी देर पहले जब मैं बागीचे में था साढ़े पाँच हो रहे थे। लगता है घड़ी का सेल समाप्त हो गया है इसलिए यह बंद हो गई है।'' दादाजी ने दीवार पर टँगी घड़ी देखते हुए कहा।

सोनू बैठक में ही थोड़ी देर सुस्ताने के लिए बैठ गया। वह खेलकर आया था इसलिए उसे काफी पसीना भी आ रहा था। अचानक दरवाजे की घंटी बजी। सोनू की माँ ने दरवाजा खोला। सामने पड़ोस की अंजू ताई थीं। वह माँ से कुछ पूछने आई थीं। बातें करते-करते उनका ध्यान घड़ी पर गया।

''अरे! तुम्हारी घड़ी तो बंद है। बंद घड़ी तो अशुभ होती है। सारे काम ही रुक जाते हैं। इसे जल्दी से ठीक कराओ वरना तुम्हारे यहाँ सब गड़बड़ हो जाएगा। मैं तो बंद घड़ी को तुरन्त ढँककर रख देती हूँ। ऐसा करने से उसके बंद होने का दुष्प्रभाव कम हो जाता है।'' एक ही साँस में अंजू ताई ने सारी बातें बोल दीं। उनके चेहरे के भाव बता रहे थे कि बंद घड़ी होना बहुत बड़ा अपशकुन है।

''अरे, बहिन! कुछ नहीं इसका सेल समाप्त हो गया होगा। सोनू के पिताजी आएँगें तो लगा देंगे।'' माँ ने कहा।

''हाँ-हाँ! पर जल्दी लगवा लेना सेल। ऐसे कामों में देरी ठीक नहीं होती।'' अंजू ताई कहते हुए अपने घर चली गयीं। वे हड़बड़ा गयीं थीं। शायद इसलिए भी कि कहीं बंद घड़ी उनके भी काम न बिगाड़ दे।''

सोनू बैठा-बैठा यह सब देख-सुन रहा था। अंजू ताई के जाने के बाद वह घड़ी को देखकर कुछ सोच ही रहा था कि उसके पिता कार्यालय से आ गए। सोनू को खोया देख वे बोले- ''और सोनू घड़ी देखकर मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो?''

''अरे! नहीं नहीं, वो तो मैं....।''

''लो! मैं तुम्हारी पसंद की मिठाई लाया हूँ। जाओ, अपनी माँ को दे आओ।'' सोनू मिठाई का डिब्बा माँ को रसोई में देने गया। पिताजी अपने जूते-मोजे उतारकर सोफे पर आराम करने लगे। थोड़ी देर में माँ पानी का गिलास लेकर आयीं। वे पिताजी को पानी देते हुए बोलीं- ''मैं चाय बना रही हूँ। उसके बाद आप इस घड़ी का सेल बदल देना। शायद समाप्त हो गया है।''

''हाँ पिताजी! नहीं तो सारे काम बिगड़ जाएँगे। हो सकता है हमारा कल का रविवार ही इस बंद घड़ी के कारण खराब हो जाए।''

''अच्छा! ऐसा भी होता है।'' पिताजी ने सोनू के सिर पर हाथ फिराया और उसकी माँ की ओर देखकर मुस्करा उठे।

चाय पीने के बाद जब पिताजी ने अलमारी में सेल देखा तो उसमें सेल नहीं था।

''अरे! सारे सेल समाप्त हो गए। चलो कोई बात नहीं, कल बाजार खुलेगा तब लाकर लगा दूँगा। तब तक मोबाइल में समय देख लेंगे।''

लेकिन सोनू पिताजी की यह बात सुनकर चिंतित हो उठा। उसने सोचा कि अब अवश्य कुछ न कुछ अशुभ होगा, गड़बड़ होगा।

थोड़ी देर बाद वह पढ़ने बैठा। उसने देखा कि आज गणित के सवाल उससे हल हो ही नहीं पा रहे थे। उसने हिंदी का काम निकाला और कविता कॉपी में उतारने लगा। लेकिन यह क्या पेन चलते-चलते बंद हो गया। उसने दूसरा पेन लिया तो वह भी एक-दो शब्द लिखने के बाद गिर गया, और उसकी निब टूट गयी। सोनू को लगने लगा कि बंद घड़ी का दुष्प्रभाव होने लगा है।

वह दौड़ा-दौड़ा माँ के पास गया और बोला- ''माँ! यदि सेल नहीं लग सकता है तो आप उस घड़ी को उतारकर ढँककर ही रख दीजिए। वरना घर के सारे काम गड़बड़ हो जाएँगे।''

''अरे सोनू बेटा! ऐसा कुछ नहीं होता। जा तू हाथ धो और अपने पिताजी और दादाजी को खाने के लिए बुला ला। घड़ी में तो सेल कल बदल ही जाएगा। और तू क्यों इतना परेशान है, तेरे कौन से काम बिगड़ रहे हैं?''

सोनू बेचारा क्या बताता कि उसके कितने काम बिगड़ रहे हैं।

अब सभी खाने के लिए बैठे ही थे कि बिजली चली गई। इन्वर्टर ने भी काम नहीं किया सो एकदम अँधेरा हो गया। सोनू बोला- ''देखिए माँ! अँजू ताई की बात सच हो रहीं हैं न! अब इस बंद घड़ी के कारण इन्वर्टर भी खराब हो गया।''

पिताजी ने मोबाईल की टॉर्च से उजाला किया। दादाजी बोले- ''अरे! खराब नहीं हुआ। आज मैंने उसकी बैटरी में पानी डाला था इसलिए प्लग निकाल दिया था। शायद फिर से लगाना भूल गया।'' इतना सुनकर सोनू के पिताजी उठे और जाकर उन्होंने प्लग लगाया और इन्वर्टर ने काम करना शुरू कर दिया। लेकिन सोनू को तो पूरा विश्वास हो गया था कि कभी न जाने वाली बिजली अभी बंद घड़ी के कारण चली गई थी। खाना खा-पीकर सोनू अपने कमरे में सोने के लिए गया। लेकिन, उसे नींद नहीं आ रही थी। उसका ध्यान तो बंद घड़ी में रुकी हुई सुई की तरह वहीं अटका हुआ था।

अगले दिन रविवार को जब सोनू उठा तो उसने देखा कि पिताजी स्टोर में से सिलेंडर निकाल रहे हैं। ''क्या हुआ पिताजी! सुबह-सुबह सिलेंडर उठा रहे हैं?''

''अरे बेटा! रसोई में जो सिलेंडर लगा था। वह समाप्त हो गया इसलिए नया लगा रहा हूँ। अब सिलेंडर लगे तो सबको चाय मिले।''

सोनू बैठक में बैठ गया। थोड़ी देर में पिताजी भी सिलेंडर लगाकर बैठक में आकर बैठ गये। वहाँ दादा जी

बहुत देर से फोन हाथ में लिए बैठे थे, और कुछ परेशान भी थे।

''क्या हुआ दादा जी! आपका फोन भी बंद घड़ी के कारण गड़बड़ हो गया।''

''पता नहीं सोनू! बहुत देर से कॉल मिला रहा हूँ लेकिन मिल ही नहीं रही। हाँ, कॉल आ अवश्य रही है।''

''तो दादाजी! घड़ी ने आपका भी फोन खराब कर ही दिया मेरे पेन की तरह।''

''तुम्हारे पेन की तरह! क्या कह रहे हो? घड़ी ने तुम्हारा पेन खराब कर दिया।''

''और क्या दादाजी! कल जब से घड़ी बंद हुई है तब से गड़बड़ हो रही है। मैं कल बहुत देर गणित के प्रश्न करने का प्रयत्न करता रहा, लेकिन हुए नहीं। फिर जब हिंदी का काम करने बैठा तब एक पेन चला नहीं और दूसरा गिरकर खराब हो गया। कल भोजन के समय बिजली चली गई और इन्वर्टर ने भी गड़बड़ की। बंद घड़ी के कारण ही मुझे नींद भी बहुत देर में आयी। और आपने सुबह से नहीं देखा कि सिलेंडर समाप्त हो गया और अब आपके फोन से कॉल नहीं हो रही है। यह सब इस बंद घड़ी के कारण ही तो है।'' यह कहते हुए उसने दीवार पर घड़ी की ओर देखा, लेकिन घड़ी तो वहाँ थी ही नहीं।

''अरे! यहाँ से घड़ी कहाँ गयी?'' सोनू ने चाय लेकर आतीं माँ को देखा तो वह मुस्कुरा उठीं। पिताजी बोले! ''घड़ी रूठकर कहीं चली गयी।''

''रूठकर चली गयी। अरे पिताजी! आप भी कैसी बात करते हैं।''

''वैसी ही जैसी आप कर रहे हैं।''

''मैं..... मैं कैसी बात कर रहा हूँ?''

''अरे! आप कल से बार-बार कह रहे हैं कि सारी गड़बड़ घड़ी के कारण हो रही है। इसलिए घड़ी को बुरा लगा, और वह रूठकर चली गयी।''

''हाँ-हाँ, वो मुझसे कह रही थी कि मेरे बंद होने के कारण ही सब गड़बड़ हो रहा है, अशुभ हो रहा है, तो मैं जा रही हूँ।'' माँ ने पिताजी की बात का समर्थन किया।

सोनू सबका मुँह देख रहा था, और सभी उसकी ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे। सोनू की माँ उसके पास आकर बैठीं और उसके बालों पर हाथ फिराते हुए बोलीं- ''बेटा! बंद घड़ी के कारण कुछ गड़बड़ नहीं हुई। गड़बड़ हुई तुम्हारी सोच के कारण। क्योंकि तुमने अंजू ताई की बात को सच मान लिया। वरना बाकी जितनी बातों का उल्लेख तुमने किया वह तो होती ही रहती हैं। क्या तुम्हारे पेन की स्याही पहले समाप्त नहीं हुई, क्या तुमसे पहले पेन गिरकर खराब नहीं हुए या बाकी जितनी बातें तुम बता रहे हो वे पहले नहीं हुईं। लेकिन इस बार तुमने उन सबको घड़ी के बंद होने से जोड़ लिया इसलिए वह रूठ गई।''

''क्या सच में घड़ी रूठ कर चली गयी माँ!''

''अरे... अरे, अब बेचारे सोनू को और परेशान मत करो। उसे सच बताओ और मेरा रीचार्ज कर दो रात को समाप्त हो गया तो आउट गोईंग बंद हो गयी है।'' दादाजी बोले।

पिताजी मुस्कुराए और उन्होंने सोनू को दूसरी दीवार पर टँगी घड़ी दिखाई।

''अरे! यह तो चल रही है।''

''हाँ चल रही है। और कल रात से ही चल रही है। मैंने कल शाम को ही भोजन से पहले इसका सेल बदल दिया था। लेकिन तुम्हारे दिमाग की सुई को ठीक करने के लिए हमने बताया नहीं, और तुमने इस घड़ी को देखा नहीं।''

सोनू सोचने लगा कि हाँ, उसने तो पिताजी के आने के बाद केवल एक बार ही घड़ी देखी थी। उसके बाद तो वह केवल उसके बंद होने के बारे में सोचता ही रहा। उसने घड़ी देखी ही नहीं।

सोनू के दिमाग की सुई जो गड़बड़-अशुभ जैसे शब्दों पर अटक गयी थी, चल पड़ी और वह शरमाकर मुस्कुरा उठा।

- अलीगढ़ (उ. प्र.)

मधुमक्खी का छत्ता

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

पिताजी का स्थानांतरण (ट्राँसफर) होने के बाद जब मोहक नए शहर के नए घर में आया तो उसने देखा कि उनके घर के बाहर लगे नीम के पेड़ पर मधुमक्खी का एक बड़ा छत्ता लगा हुआ है। मोहक को मधुमक्खियों से बहुत डर लगता था। उसे एक बार मधुमक्खी ने काटा था तो उसे बहुत दर्द हुआ था। मोहक डरते–डरते पिताजी के साथ घर में घुसा।

पिताजी ने उससे पूछा– ''इतना डर क्यों रहे हो?''

मोहक ने हकलाते हुए कहा– ''वह मधुमक्खी का छत्ता.. मुझे मधुमक्खियों से डर लगता है।''

मोहक की बात सुनकर पिताजी मुस्कुराते हुए बोले– ''क्या हुआ बेटा! मधुमक्खियाँ तुम्हें काट नहीं रही हैं... जब हम छत्ते से छेड़खानी करते हैं तब मधुमक्खियाँ हमला बोलती हैं। हम तो ऐसा कुछ कर ही नहीं रहे।''

पिताजी की बात सुनकर मोहक का डर समाप्त नहीं हुआ था। अब वह घर से बाहर डरते–डरते ही निकलता था। वह रोज यही सोचता था कि कैसे यह छत्ता यहाँ से हटाया जाए। उसने माताजी से भी कहा– ''माँ! यह छत्ता यहाँ से हटवा दो ना... किसी दिन मधुमक्खियों ने हमला बोल दिया तो...।''

माँ ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया– ''बेटा! शहरों में तो ये छत्ते फिर भी कम देखने को मिलते हैं... गाँवों में तो जगह–जगह पर ऐसे छत्ते देखने को मिल जाते हैं। तुम्हें पता है न... मधुमक्खियाँ हमें शहद देती हैं। शहद की एक–एक बूँद बनाने के लिए वे बहुत परिश्रम करती हैं। शहद हम मनुष्यों के लिए बहुत उपयोगी होता है।''

माँ की बात सुनकर मोहक ने कहा– ''आपकी बात सही है माँ! पर मैं क्या करूँ... मेरा डर समाप्त ही नहीं होता।''

माँ ने मोहक से कहा– ''हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे आँगन में नीम का पेड़ है। इस पर पक्षियों के घोंसले बने हुए हैं... मधुमक्खियाँ भी यहाँ रहती हैं और इसके कोटर में नन्हीं गिलहरियाँ भी हैं।'' यह कहकर माँ अपने काम में लग गयी थीं।

मोहक ने सोचा– ''माँ और पिताजी तो उसकी बात नहीं समझ पाएँगे और दादा–दादी भी नहीं समझेंगे क्योंकि दादा–दादी को तो नीम के पेड़ और जीव–जंतुओं से बहुत प्यार है। प्यार तो उसे भी है लेकिन बहुत डर लगता है। इस छत्ते के कारण उसका खेलने जाना भी बहुत कम हो गया है।

उसने सोच लिया था कि शौनक काका आएँगे तो वह उनसे कहकर इस नीम के पेड़ को ही यहाँ से हटवा देगा। न रहेगा नीम का पेड़ और न रहेगा मधुमक्खी का छत्ता। मोहक ने काका को फोन लगाया और पूछा कि वे कब आएँगे। काका ने उससे अगले सप्ताह आने का वादा किया। मोहक ने राहत की सांस

ली। उसने सोचा– ''चलो कुछ दिन की बात है... नीम के पेड़ को हटाने के बाद मधुमक्खियों के छत्ते से भी मुक्ति मिल जाएगी।''

ऐसा सोचते–सोचते ही मोहक को नींद आ गई थी। रात को कुछ आवाजें सुनकर मोहक की नींद खुल गई। उसे लगा कि कोई उसके कमरे की खिड़की की ग्रिल काटने का प्रयत्न कर रहा है। मोहक सोचने लगा कि वह तो दूसरी मंजिल पर है। भला ऊपर कौन आ पाएगा।

आवाजें लगातार तेज हो रहीं थीं। तभी उसका माथा ठनका अच्छा तो कोई नीम के पेड़ पर चढ़ गया है और वहीं से उसके कमरे में घुसने का प्रयत्न कर रहा है। मोहक को बहुत गुस्सा आया। नीम का पेड़ नहीं होता तो चोर ऊपर नहीं चढ़ पाता। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। तभी अचानक किसी के चीखने–चिल्लाने की आवाज आने लगी। मोहक झटपट नीचे आया। उसने देखा कि माता–पिता खिड़की का पर्दा हटाकर बाहर देख रहे थे।

मोहक बोला– ''पिताजी! आप बाहर क्या देख रहे हैं?''

पिता ने उत्तर दिया– ''मोहक हमें चोर को पकड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है... नीम के पेड़ और मधुमक्खियों ने अपना काम कर दिया है।''

मोहक आश्चर्य से पिता की ओर देख रहा था। पिताजी ने आगे बताया– ''चोर नीम के पेड़ की शाखा पर चढ़कर तुम्हारे कमरे में घुसने का प्रयत्न कर रहा था तभी वह शाखा टूट गई और पेड़ से गिरते हुए चोर का पाँव मधुमक्खियों के छत्ते को छू गया। बस मधुमक्खियाँ उस पर टूट पड़ीं। मैंने कहा था ना.. यह पेड़ और मधुमक्खियाँ हमारे साथी ही हैं।''

मोहक को अपनी सोच पर बहुत पछतावा हो रहा था। वह तो इस नीम के पेड़ और मधुमक्खी के छत्ते को हमेशा के लिए हटाने वाला था। थोड़ी देर में पुलिस आ गई थी और चोर को पकड़कर ले गई। मोहक ने नीम के पेड़ और मधुमक्खियों के छत्ते को हटाने का विचार त्याग दिया था। अब उसका डर हमेशा के लिए दूर हो गया था।

– जयपुर (राजस्थान)

छः अँगुल मुस्कान

चिकित्सक– हाँ तो आपको कहाँ दर्द है?

रोगी– फीस कम करो तो बताऊँगा, अन्यथा स्वयं ही खोज लूँगा।

*****

जब–जब मुझे सफलता की चाबी मिली है। तब–तब कोई नालायक ताला बदलकर भाग गया है।

*****

'तेल' का भाव जब से सौ रुपए हुआ है, तब से वो 'सौ तेला' लगने लगा है।

*****

हर तालियों के पीछे आवश्यक नहीं कि आपकी सराहना हो। हो सकता है कोई मच्छर भगा रहा हो।

*****

चिकित्सक– तुम गटर में कैसे गिर गए?

शराबी– दुर्भाग्य है, क्या बताऊँ... ढ़क्कन खुला था, मुझे लगा सोशल डिस्टेंसिंग वाला गोला है।

*****

खर्राटा एक ऐसा संगीत है जिसे बजाने वाला स्वयं नहीं सुन पाता पर दूसरों की बैंड बजा देता है।

–विष्णु प्रसाद चौहान,
ढाबला हरदू

आपकी पाती

मान्यवर! सादर अभिवादन। देवपुत्र का मार्च २०२२ अंक मिला। हार्दिक आभार। मेरे आवास पर श्यामनारायण श्रीवास्तव, बंधु कुशावर्ती और डॉ. रामप्यारे प्रजापति ने भी इसे देखा। सबकी त्वरित प्रतिक्रिया यह थी कि स्वतंत्रता के अमृत वर्ष– ७५वीं वर्षगांठ पर देशप्रेम, वीरभाव और राष्ट्रीय चेतना से भरी ७५ कवियों की ७५ राष्ट्रीय बालगीतों का प्रकाशन अवसर के अनुकूल एक सार्थक कदम है।

इस अंक में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', भवानी प्रसाद मिश्र, कामता प्रसाद गुरु, सोहनलाल द्विवेदी, सभा मोहन अवधिया 'स्वर्ण सहोदर', रामनरेश त्रिपाठी, श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' रामसिंहासन सहाय 'मधुर' और निरंकार देव सेवक सदृश्य अति चर्चित और बाल साहित्य की बुनियाद रखने वाले कवि हैं, तो साथ ही बाद की पीढ़ी के चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक', डॉ. राष्ट्रबंधु, नरेशचन्द्र सक्सेना 'सैनिक', रामभरोसे गुप्त 'राकेश', विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' चक्रधर नलिन, रामावतार त्यागी भी उपस्थित हैं।

बाल साहित्य को पूर्णतया बाल मनोभावों, आशाओं और स्वप्नों के अनुकूल बनाकर प्रस्तुत करने में इस पीढ़ी के रचनाकारों का बड़ा योगदान है।

इसके अलावा बाल साहित्य के क्षेत्र में आज के सक्रिय और चर्चित रचनाधर्मियों यथा अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन', पद्मा चौगांवकर, शिवचरण चौहान, गोपाल माहेश्वरी, राकेश 'चक्र' और भगवती प्रसाद द्विवेदी की उपस्थिति ने इस अंक को पाँच पीढ़ियों की रचनात्मकता का संगम बना दिया है।

अंत में बधाई और शुभकामनाएँ।

दिनेशप्रताप सिंह 'चित्रेश',
सुलतानपुर (उ. प्र.)

शिशु गीत

बाबाजी की दाढ़ी

– विष्णुकांत पाण्डेय

आदरणीय श्री विष्णुकांत पाण्डेय जी ०७ मई १९३३ को संग्रामपुर चंपारण (बिहार) में जन्मे और अनेकानेक रोचक बाल साहित्य रचनाओं से माँ भारती का कोश भर कर २२ सितम्बर २००२ को दिवंगत हुए। प्रस्तुत है आपका एक रोचक शिशु गीत–

लिए पोपला मुँह बाबाजी,
झूठमूठ का पान चबाते।
बिना दाँत खुद हँस लेते हैं,
और हमें भी खूब हँसाते।
वे जितना हँसते जाते हैं,
उतनी तोंद उछलती जाए।
जितना ही मुँह चलता उनका,
उतनी दाढ़ी चलती जाए।

–चंपारण (बिहार)

अम्माजी का पानदान

– सुधा रानी तैलंग

एक गाँव में एक बूढ़ी अम्माजी रहती थी। उनके पति बहुत–सी सम्पत्ति छोड़कर चल बसे। बाल बच्चे थे नहीं। इसलिए अपने घर में वह अकेली ही रहती थी। अम्माजी को पान खाने का बड़ा शौक था। उन्होंने पान रखने के लिए अपने पड़ौसी से सुंदर चाँदी की पच्चीकारी (नक्काशी) वाला बहुत ही सुंदर पानदान मँगवाया। अम्माजी अपनी पानपेटी को देख–देख बहुत खुश होती। अपने पानदान को वह जान से भी अधिक प्यार करती थी।

पर उन्हें इस बात का दु:ख था कि कोई भी पड़ोसी उनके इतने महँगे और सुंदर पानदान की प्रशंसा तक नहीं करता। अम्माजी इस बात को लेकर मन ही मन बहुत परेशान रहती थीं।

एक दिन बैठे–बैठे अम्माजी ने सोचा क्यों न लोगों को पान खिलाना शुरु कर दूँ। थोड़ी बातें भी हो जाएगी, मेरा खाली समय भी कट जाएगा और फिर पान खाने वाले लोग तो मेरे इस सुंदर पानदान की बड़ाई अवश्य करेंगे।

अम्माजी ने अपने पानदान को देखा और उस पर हाथ फेरती हुई बोली– ''अरे, तुम्हें बरसों पहले भोपाल से मँगवाया था। इतने बरसों बाद भी तुम आज भी वैसे ही चमचमा रहे हो और फिर चाँदी की नक्काशी तो ऐसी है कि तुम पर से किसी की नजर भी नहीं हट सकती।''

पानदान पर किसी की नजर नहीं लग जाए यह सोचकर अम्मा ने एक मनिहारिन से काला धागा खरीद कर उसमें बाँध दिया।

बस फिर क्या था अम्माजी अपने चबूतरे पर आसन जमाकर बैठ जाती। राह चलते लोग अम्माजी से राम–राम करते तो वह आते–जाते लोगों को रोक कर कहती– ''अरे! आओ, बैठो। मैं पान बहुत अच्छा बनाती हूँ। अब आये हो तो पान खाकर ही जाओ।'' लोगों को अब तो बिना पैसे के निशुल्क पान खाने को मिलने लगा। पूरे गाँव में तो अब अम्माजी के पान के चर्चे होने लगे। पर कोई भी उनके पानदान की खूबसूरती की प्रशंसा नहीं करता। लोग पान खाते और चलते बनते। यह देख अम्माजी को बहुत बुरा लगता।

एक रात अम्माजी ने रात को लेटे-लेटे सोचा कि यह उपाय तो काम नहीं आया। पान खिलाने से मेरे पैसे फालतू में खर्च हो रहे हैं। और किसी ने भी आज तक मेरे पानदान की ओर देखा तक नहीं। कुछ और ही उपाय अब सोचना पड़ेगा। उन्होंने अपने घर में पिछवाड़े से लाकर घास-फूस समेटा और चूल्हे से अँगारे चिमटे से उठाये और रख दिए। गर्मी के दिन थे। कुछ ही देर में आग की लपटें फैलने लगी। फिर क्या था अम्माजी जोर-जोर से चिल्लाने लगीं- ''बचाओ! बचाओ!''

रात को अचानक सोए हुए लोगों को बचाओ-बचाओ की आवाज सुनाई दी। लोग हड़बड़ाकर जागे। घर से बाहर निकलने पर लोगों ने देखा कि अम्माजी का घर धूँ-धूँ कर जल रहा था।

आस-पास के लोग फटाफट अपने-अपने घरों से पानी लेकर आ गए। इधर लोग दौड़-दौड़कर आग बुझा रहे थे और उधर अम्माजी बड़े मजे से अपने सुंदर पानदान से पान निकाल-निकाल कर खा रही थीं।

यह देखकर एक युवक से नहीं रहा गया और उसने हँसते हुए कहा- ''अरे अम्माजी! आपका पानदान तो बहुत सुंदर है।'' यह सुनते ही झल्लाकर अम्माजी बोलीं- ''अरे बेटा! यदि तुम पहले ही मेरे पानदान की बड़ाई कर देते तो मुझे आज अपने घर में आग लगाने की आवश्यकता क्यों पड़ती?''

अब पड़ोसियों को पूरी बात समझ में आई कि अपने पानदान को दिखाने के लिए ही अम्माजी ने आग लगाने का नाटक किया था। आग बुझ जाने के बाद सभी लोग हँसते हुए कहने लगे- ''अरे वाह! अम्माजी! आपके पानदान का तो जवाब नहीं।''

अब फिर क्या था इसके बाद तो जो कोई उनके घर के सामने से निकलता वह अम्माजी के पानदान की प्रशंसा किए बिना नहीं रहता। अब तो पूरे गाँव में चारों ओर अम्माजी के पानदान के ही किस्से सुनाई देते थे।

- भोपाल (म. प्र.)

झूठी शान

झूठी शान के फेर में
बुद्धि नाश हो जाय।
हँसी उड़ावे लोग सब
इक पल चैन न पाय।।

कालजयी बाल कविताओं के सर्जक : सूर्यकुमार पांडेय

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

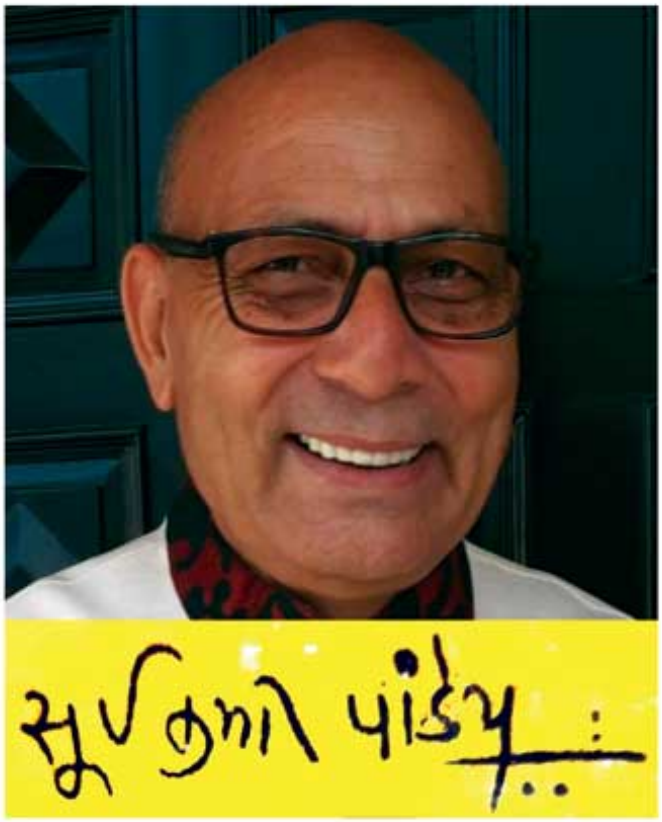

प्यारे बच्चो! कहते हैं सच्ची और अच्छी कविता वह होती है, जिसमें बच्चों के होठों से दोस्ती करने की ताकत हो। बाल साहित्य के वरिष्ठ रचनाधर्मी सूर्यकुमार पांडेय की कविताएँ ऐसी ही हैं। आप उन्हें पढ़ोंगे तो चहक उठोगे। अपनी सरलता, सहजता और रोचकता के चलते उनकी कविताएँ मन पर चढ़ जाती हैं। शिशु, बालक और किशोरों ; उन्होंने सबके लिए बेजोड़ लेखन किया है। छंद और शिल्प की दृष्टि से उनके नव प्रयोग बाल साहित्य में बतौर उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं। बाल साहित्य और हास्य–व्यंग्य साहित्य की सर्वाधिक कठिन विधाएँ मानी जाती हैं। पांडेय जी दोनों ही विधाओं में प्रवीण हैं।

सूर्यकुमार पांडेय का जन्म १० अक्टूबर १९५४ को बलिया में शांति पांडेय और योगीन्द्र पांडेय की संतान के रूप में हुआ था। उन्होंने सांख्यिकी विषय में एम. एम–सी. करने के बाद जीविका के लिए राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान उ. प्र. लखनऊ में वरिष्ठ शोध अधिकारी जैसे महत्वपूर्ण पद पर कार्य किया।

पांडेय जी की पहली रचना १९६६ में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने रचनाओं की संख्या बढ़ाने के बजाय सदैव लेखन में गुणवत्ता पर ध्यान दिया। वैसा लिखा, जैसा कोई नहीं लिख सका। अब तक उनकी कुल २८ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें बाल कविताओं की ११ पुस्तकें हैं। गीत तुम्हारे, हम बच्चे, फूल खिले, चूहे राजा, बंदरजी की दुम, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, गीत चुनमुने, अक्कड़–बक्कड़, हम हैं किससे कम, आज के समय के बच्चों की १०१ कविताएँ, चौरीचौरा, जनक्रांति का नया सवेरा।

अनेक पुरस्कार–सम्मानों के अतिरिक्त उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से बाल साहित्य का सर्वोच्च सम्मान बाल साहित्य भारती भी प्राप्त हो चुका है।

आइए, हम यहाँ पढ़ते हैं कवि सूर्यकुमार पांडेय की कुछ अनूठी कालजयी बाल रचनाएँ–

(बाल गजल)

नहीं डाँटें

बात जब हो नहीं सही, डाँटें,
देखें गलती जहाँ, वहीं डाँटें।
घर में आए हों दोस्त जब मेरे,
कम–से–कम आप तब नहीं डाँटें।
राह चलते, दुकान पर, घर में,
है न अच्छा कि हर कहीं डाँटें।
आप के बाद मैं हुआ पैदा,
गलती मुझसे हुई यही, डाँटें।
गलतियाँ आप भी तो करते हैं,
मुझसे भी हो रहीं, नहीं डाँटें।

हाइकू

बछड़ा बोला गाय से–
दूध नहीं पीना मुझको,
काम चलेगा चाय से।

बिल्ली बोली शेर से–
ठीक समय पहुँचो स्कूल,
क्यों आते हो देर से ?

बंदर बोला भेड़ से–
मामा अगर कहा मुझको,
कूद पड़ूँगा पेड़ से।

हाथी बोला ऊँट से–
प्यास बुझाऊँ मैं कैसे,
पानी के दो घूँट से।

(त्रिपदी)

धूप

आकर बैठी दरवाजे पर,
उछली, पहुँच गई छज्जे पर
वह नन्ही चिड़िया–सी धूप।

पल में आ जाती धरती पर,
पल में हो जाती छू–मंतर
जादू की पुड़िया–सी धूप।

लुढ़क रही कमरे के अंदर,
बैठी मस्ती से बिस्तर पर
जापानी गुड़िया–सी धूप।

पके आम से गालों वाली,
और सुनहरे बालों वाली
लगती है बुढ़िया–सी धूप।

(नन्हें गीत)

चाय

पानी, पत्ती गईं उबाली।
उबल गई तब कप में डाली।
दूध मिलाया, चीनी डाली।
अम्मा, हमने चाय बना ली।

घड़ी

दस बजकर दस मिनट हुआ जब,
बैठी मूँछें ऐंठ।
आठ बीस हैं, घड़ी झुकाकर,
मूँछ, गई है बैठ।

चक्की

चक्की चलती पुक–पुक–पुक,
गट्ठर वाले रुक–रुक–रुक।
गेहूँ दे, आटा ले जा।
रोटी सेक, मजे से खा।

रात

पापा जी की दाढ़ी रात।
माँ की काली साड़ी रात।
सूरज जिसमें छिपा दुबककर,
काँटों वाली झाड़ी रात।
चंदा इंजन, तारे डिब्बे,
छुक–छुक करती गाड़ी रात।
दिन जिसके पीछे जा बैठा,
ऊँची एक पहाड़ी रात।
आँख–मिचौली खेला करती,
सचमुच बड़ी खिलाड़ी रात।

होली

होली पर भी मुश्किल के
मौके आते ऐसे।
सोच रहा खरगोश, ऊँट
के गले मिले कैसे ?

आ गए बादल

लगे झींगुर बजाने वॉयलिन,
लो आ गये बादल।
छतों पर गिर रहीं बूँदें
कि जैसे थाप तबलों की,
कि होता तिनक–ता–ता धिन
गगन में छा गये बादल।
छमाछम बरसता पानी
कि जैसे खनकती पायल,
फुहारों से भरे हैं दिन
सभी को भा गये बादल।
लगे हैं राग में गाने
सभी तालाब के मेंढ़क,
भरे संगीत से पल–छिन
हमें बतला गये बादल।

रावण

पूछ रहा है बबलू अम्मा!
मुझे जरा बतलाना।
दस मुँह थे रावण के,
किस मुँह से खाता था खाना?
दस सिर थे, किस करवट अम्मा!
रावण सोता होगा?
दस तोंदें होंगी रावण की,
कितना मोटा होगा।
सौ टन रबड़ी, नौ मन पूड़ी,
कितना खाता होगा?
एक साथ क्या दस गाने
अम्मा वह गाता होगा?

– शाहजहाँपुर उ. प्र.)

संस्कार

– मीरा जैन

१४ वर्षीय अतुल ने तुनकते हुए कहा– ''पिताजी! आप मेरे लिए चप्पल बहुत सुंदर लेकर आये हो किन्तु इसकी लंबाई थोड़ी अधिक है और मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आयी मुझे नहीं पहननी है यह चप्पल।''

जतिन ने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया। किन्तु अतुल नहीं माना। अंतत: हार कर जतिन ने कहा– ''ठीक है! तेरे लिए दूसरी चप्पल ला दूँगा, इसे किसी और को दे देंगे।''

इतना सुनते ही अतुल हाथों में चप्पल का डिब्बा ले दादाजी के पास पहुँच गया– ''दादाजी दादाजी! यह लो शानदार चप्पल अब आपको घर में नंगे पैर नहीं चलना पड़ेगा।''

दादाजी अपने प्रति अतुल के लगाव को जानते थे। ''सच बता अतुल! मैं सब कुछ सुन रहा था, क्या वास्तव में यह चप्पल तुझे पसंद नहीं है?''

अतुल दादाजी से कभी झूठ नहीं बोलता था। अत: चुपचाप खड़ा रहा तब दादाजी ने कहा– ''अतुल बेटा! तुम्हें पिताजी से झूठ नहीं बोलना चाहिए था। इस तरह का आचरण छल–कपट की श्रेणी में आता है।''

''पर दादाजी! पिताजी हम सबके लिए मुंबई से कुछ ना कुछ उपहार लेकर आये किन्तु आपके लिए कुछ नहीं लाये यह मुझे अच्छा नहीं लगा।''

इस पर दादाजी ने अतुल को आत्मविश्वास के साथ सत्य कहने का साहस उत्पन्न करने हेतु कहा– ''यदि तुम्हें बुरा लगा तो यह बात मुझसे नहीं अपने पिताजी से कहनी चाहिए थी।''

इतना सुनते ही अतुल पूरे आत्मविश्वास के साथ दौड़ पड़ा पिताजी के कमरे की ओर। इस घटना के पश्चात जतिन ने कभी पिताजी की अनदेखी नहीं की और न ही फिर कभी अतुल ने झूठ बोला।

– उज्जैन (म. प्र.)

गोपाल की गर्मी

–तपेश भौमिक

एक बार गर्मी के मौसम में खूब गर्मी पड़ी थी। लोग गर्मी से बेहाल हुए जाते थे। गोपाल गर्मी के कारण कुछ अधिक ही परेशान चल रहे थे। किसी की सीधी–सी बात पर भी वह बौखलाने लगे थे। इसलिए स्वयं महाराज भी उनसे बिदके हुए थे। परिणाम स्वरूप इन दिनों वे अपने मंत्रीजी की बातों पर अधिक विश्वास करने लगे थे। उधर गोपाल मंत्रीजी को फूटी आँखों भी नहीं सुहाते थे एवं वे भी मंत्रीजी को नीचा दिखाने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ते थे। ऐन वक्त पर महाराज को यह समझ में नहीं आती थी कि वे किस पक्ष का समर्थन करें।

महाराज के सिंहासन के दोनों ओर दो पंखा डुलाने वाले तब तक पंखा झलते रहते जब तक दरबार चलता रहता। नियमानुसार राजा के पास मंत्रीजी के बैठने का स्थान था। लेकिन स्नेहवश महाराज मंत्रीजी को दूर बैठाकर गोपाल को अपने पास बैठा लेते थे। प्राय: ऐसा ही होता था। कभी–कभी इस बात पर मंत्रीजी अपने आपको अपमानित महसूस करते और दरबार से बाहर गोपाल को उल्टी–सीधी बातें सुनाने लगते। वैसे गोपाल के आगे मंत्रीजी की कभी दाल भी नहीं गली, उन्हें प्राय: मुँह की ही खानी पड़ती थी।

अत्यधिक गर्मी के कारण गोपाल इन दिनों राजसभा में प्रात: ही स्नान पूजा आदि करके आने लगे थे ताकि धूप का तेज भी न सहना पड़े और महाराज के पास वाले आसन पर बैठने का अवसर भी मिले साथ–साथ पंखे की हवा का आनंद भी लिया जा सके।

अधिकांश मंत्रीजी महाराज के आगमन पर उनके साथ ही पधारा करते थे, यह राजसभा का अनुशासन भी था। लेकिन उन दिनों गोपाल पहले से ही राजसभा में उपस्थित रहते और विधिवत महाराज का स्वागत करते और मंत्रीजी की ओर देखकर मुस्कराते रहते। इससे मंत्रीजी जल–भूल कर रह जाते। उनसे न कुछ कहते बनता था न सहते बनता था।

तभी एक दिन मुर्शिदाबाद के नवाब ने अपने संदेशवाहक के द्वारा यह कहला भेजा कि तीन दिन बाद वे महाराज से किसी आवश्यक विषय पर बात करने आ रहे हैं। इस समाचार के मिलते ही राजसभा में एकदम मौन–सा छा गया। कारण यह था कि जब–जब नवाब आते तब–तब तरह–तरह के आरोप लगाकर महाराज से धन–दौलत ऐंठ कर चले जाते। संतुष्टि न होने पर राज्य हड़पने की धमकी भी दे डालते थे।

अब एक आवश्यक सभा बुलाई गई एवं मुर्शिदाबाद के नवाब का स्वागत–सत्कार कैसे किया जाए, इस पर सबके विचार लिए जा रहे थे। कई

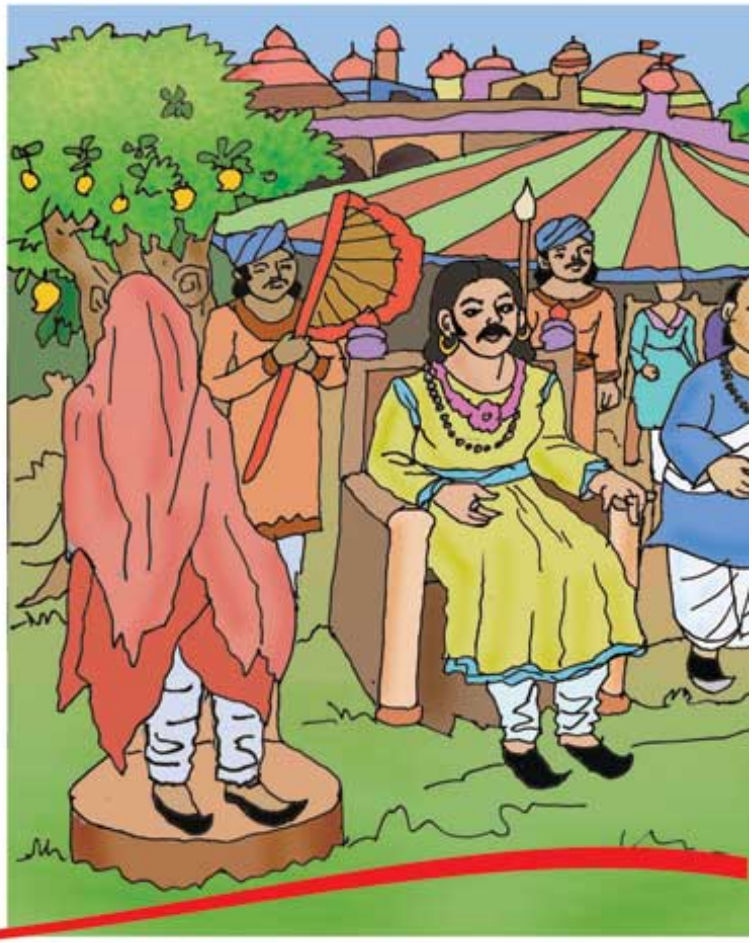

सभासदों ने अपने विचार व्यक्त किए, जिन्हें मंत्री ने सिरे से निरस्त कर दिया। तभी सबकी दृष्टि गोपाल की ओर गई। सबको पता था कि गोपाल कोई-न-कोई मार्ग अवश्य बताएँगे। महाराज ने गोपाल की ओर देखा तो वे कुछ कहना ही चाह रहे थे कि मंत्रीजी गोपाल की ओर देखकर मुँह बनाकर हँसने लगे। गोपाल ने उसकी अनदेखी करते हुए कहा-

''महाराज! यदि आज्ञा हो तो मैं अपने विचार रखूँ?'' तब महाराज ने आज्ञा देने पर गोपाल ने कहा-

''महाराज! इस वर्ष गर्मी काफी अधिक है। इस गर्मी में गरम दिमाग वाले नवाब पधारेंगे तो उनका दिमाग और अधिक गरम हो जाएगा। ऐसे में उनके स्वागत के लिए नदी किनारे आम के बगीचे में शामियाना लगाया जाए ताकि शीतल बयार आती रहे। साथ ही महाराज के लिए लस्सी और ठंडाई की व्यवस्था की जाए और खाने के लिए तरबूज दिए जाए। इनसे वे शीतलता का अनुभव करेंगे जिससे आशा करता हूँ कि सब कुछ शांति से निपट जाएगा।''

इस पर मंत्री ठठाकर हँसते हुए गोपाल का विनोद करने लगे। महाराज भी सोच में पड़कर कहने लगे कि भला नवाब को नवाबी भोजन न कराकर लस्सी, ठंडाई तरबूज यह सब खिलाने से वे इन चीजों को हल्के में लेंगे और अपने आप को अपमानित अनुभव करेंगे, जिससे हमें कठिनाई हो सकती है। जब महाराज ने मंत्रीजी की ओर देखा तो उन्हें भाषण देने का अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने कहा- ''आज मैं ऐसी स्वागत योजना के बारे में बताऊँगा जिसे नवाब का दिल खुशी से बाग-बाग हो जाएगा। वे प्रसन्न तो होंगे ही साथ ही साथ हमारे महाराज को गले से भी लगा लेंगे।''

तब महाराज ने न चाहते हुए भी आज्ञा दे दी तो मंत्रीजी अपने दोगुने उत्साह से काम में लग गए। इस दौरान उन्हें और दो-दो लाभ होने की संभावना बन गई। एक तो महाराज से पुरस्कार पाना और दूसरा गोपाल को नीचा दिखाना। उन्होंने राज्य के सबसे अच्छे मूर्तिकार को बुला भेजा। मूर्तिकार तुरंत सेवा में उपस्थित हुआ तो उसे यह कहा गया कि वह मुर्शिदाबाद के नवाब की एक आदमकद ऐसी मूर्ति बनाए कि एकदम असली नवाब की तरह ही दिखे। समय बहुत कम था। मात्र तीन दिन ही थे। मूर्तिकार ने दिन-राज एक करके मूर्ति बना दी। इसे देखकर सबने दाँतों तले अँगुली दबा ली। गोपाल ने इन सारी बातों में कोई रुचि नहीं दिखाई। उसने चुप्पी साध ली।

जिस दिन नवाब आने वाले थे उस दिन राजमहल के बगीचे में नवाब की मूर्ति को रखा गया एवं उसे एक चोगे से ढँक दिया गया। जब नवाब साहब आए तब उनसे पहले मूर्ति का अनावरण कराया गया। अपनी ही मूर्ति देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। चोगा पूरी तरह नहीं उतरा। वह दाएँ हाथ की कानी अँगुली में फँस कर झूलता रहा। तब महाराज ने फँसे चोगे को आगे बढ़कर नीचे गिरा दिया। इस काम में नवाब की मूर्ति के दाएँ हाथ की छोटी अँगुली टूटकर

गिर गयी। नवाब ने तो ध्यान नहीं दिया पर उनसे साथ आए वजीर ने उसे अपने नवाब का अपमान बताया। इस पर नवाब ने अपने वजीर की बात को उचित ठहराते हुए क्रोध में उबल पड़े। वे कहने लगे–

''मुझे बुलाकर इस प्रकार अपमानित करना तुम्हारे लिए महँगा पड़ेगा।''

अब सारे सभासद हक्का–बक्का होकर एक–दूसरे का मुँह देखने लगे। उसी समय पर महाराज कृष्णचंद्र ने अपनी सफाई देने का प्रयत्न किया पर नवाब किसी भी स्थिति में वह मानने वाले नहीं थे कि वह चूक जानबूझकर नहीं की गई हैं।

किसी भी प्रकार से समझौता नहीं हो पा रहा था। तब वजीर ने यह शर्त लगाई कि– ''महाराज कृष्णचन्द्र को एक घंटा धूप में खड़ा रहना पड़ेगा और वैसी स्थिति में यदि उनके चेहरे पर पसीने की बूँदें न दिखे तो उनकी भूल को क्षमा किया जा सकता है।''

अब इस बात पर चारों ओर चुप्पी छा गई। यह सुनते ही मंत्री के चेहरे का रंग उतर चुका था। उन्होंने गोपाल की ओर डबडबाई आँखों से देखा। गोपाल सारी बातें समझ चुके थे। उन्होंने महाराज से आज्ञा ली और वजीर को कहा–

''वजीर साहब! आपने जो कहा है, क्या वह एक महाराज का अपमान नहीं है?''

तभी वजीर ने जरा सी भी देर न करते हुए कहा– ''हमारे नवाब का भी आप लोगों ने अपमान किया है।'' तब गोपाल ने कहा– ''यदि नवाब की मूर्ति की अँगुली टूटने से उनका अपमान होता है तो हमारे महाराज की भी मूर्ति धूप में रखी जाएगी, फिर मूर्ति से एक घंटे में पसीना निकलेगा तो बात आगे बढ़ेगी।'' ''क्या कहा?'' यह प्रश्न करते हुए वजीर का मुँह खुला का खुला रह गया।

– गुड़ियाहाटी,
कूच बिहार (प. बंगाल)

कविता

चाँद के बाराती

– गोपेंद्र कु. सिन्हा गौतम

आसमान में निकले तारे,
बहुत सुंदर और खूब प्यारे।
आसमान में रहते छितराये,
सबके मन को खूब ये भाएँ।
साथ निकलते कई हजार,
ज्यों दीवाली का बाजार।
दिन ढलते ओझल हो जाते,
बीती रात, कहीं छुप जाते।
नीले लाल–पीले, कुछ बुझे हुए,
दिखते हैं नभ में गुथे हुए।
लुका–छिपी बादल से करते,
बादल भी उनसे ना डरते।

सबके मन को खूब लुभाते,
उन्हें देख बच्चे हर्षाते।
तारे चाँद के बने बाराती,
हम बच्चों के रात के साथी।
आसमान में निकले तारे,
कितने सुंदर कितने प्यारे।

– औरंगाबाद (बिहार)

सेकेंड लैफ्टीनेंट पोलुट मुत्थुस्वामी रमन

नागालैण्ड के चेफमा गाँव में उग्रवादी छुपे हैं यह पक्की सूचना थी। एक बाईस वर्षीय नौजवान को उनका सफाया करने का आदेश मिला तो वे अपनी ३ सिख लाइट इन्फैंट्री की 'ए' कंपनी की प्लाटून लेकर निकल पड़े। ३ जून १९५६ को घने अँधेरे और कुहासे से ढँकी झोपड़ियों की आड़ में इन पर गोला बारी व गोली वर्षा तो हो रही थी पर ये उग्रवादी थे कहाँ यह ठीक से पता लगाना कठिन हो रहा था। वे गिद्ध दृष्टि जमाए साहस व सावधानी से बढ़ते जा रहे थे। एक झोपड़ी में हलचल देख फायरिंग की और दो उग्रवादी ढेर कर दिए। लेकिन पीछा करते–करते वे इस समय एक खुली जगह पर पहुँच चुके थे। एक ग्रेनेड इन वीरों के गजभर दूर पर फटा। नौजवान का सिर घायल हो गया। लेकिन इनके प्रहार प्रतिकार के आगे आक्रमण कर्ता टिक न सके, भागने लगे। एक और उग्रवादी धराशायी हो गया। मैदान साफ था पर एक छुपे हुए शत्रु ने उस नौजवान पर ताबड़तोड़ गोली बरसाना शुरू की और वे बुरी तरह घायल हो गए। घबराना इस नौजवान ने सीखा ही न था न अपनी शारीरिक दशा की पीड़ा अनुभव हो रही थी एक और उग्रवादी इस अवस्था में इनके ग्रेनेड का शिकार बना। पर घायल ही घिसटता हुआ साँप सा झाड़ी में खिसक गया। टुकड़ी के इस नौजवान नायक ने गाँव को उग्रवादियों से मुक्त कराने का आदेश दिया, पर उसके अपने प्राणों की बलि चढ़ाकर यह लक्ष्य प्राप्त हुआ।

इस वीर का नाम था सेकेण्ड लेफ्टीनेंट पोलुट मुत्थुस्वामी रमन। ४ दिसम्बर १९३४ तमिलनाडु के उत्तरी अरकोट में जन्मा। पिता मेजर मुत्थुस्वामी सेना की चिकित्सा कोर में थे। ये पिता की सातवीं संतान थे। पुणे के सरस्वती विद्यालय हाई स्कूल में पढ़े फिर वादिया कॉलेज से विज्ञान विषय में प्रथम वर्ष किया और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के चयन हो जाने से सेना में आ गए। १९५५ में सिख लाइट इन्फेन्ट्री कमीशन गया (बिहार) में तैनात हुए फिर अपनी युनिट के साथ नेफा चले गए थे।

अपनी असाधारण वीरता व साहस से वे अशोकचक्र का सम्मान प्राप्त कर भारत माता का गौरव बनें।

राष्ट्रगान के रचयिता

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर

७ मई जन्मोत्सव पर श्रद्धासहित नमन।

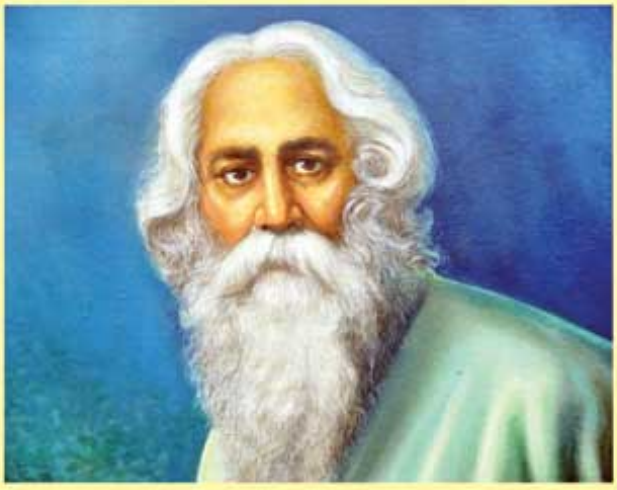

'गीतांजलि' के रचयिता
कलाकार विद्वान।
'शांतिनिकेतन' रूप में
दिया श्रेष्ठ संस्थान।।

चुस्त और फुर्तीली मक्खी

– कुसुम अग्रवाल

गर्मी और बरसात के मौसम में घरों बाजारों और कचरे के ढेर पर भिनभिनाती मक्खियाँ बरबस ही हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। दिखने में छोटी किन्तु स्वभाव से खोटी मक्खियों से सभी दूर रहना ही पसन्द करते हैं। आइए इस विशेष कीड़े के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करें।

जैसा कि नाम से अनुभूति होती है कि मक्खी यानी 'फ्लाई' को उड़ने में महारत हासिल होती है। ये हवा में तीर के समान तेज, फुर्ती से और कलाबाजी खाती हुई उड़ती है। इस धरती पर लगभग ९०,००० ऐसे कीट हैं जिन्हें हम मक्खी कह सकते हैं। परन्तु वास्तविक मक्खियाँ जिनके शरीर पर केवल एक जोड़ी (दो) पँख होते हैं केवल १०,००० प्रजाति की हैं।

अपने प्रजनन काल में मक्खी एक सुरक्षित स्थान पर जहाँ अंडों से निकले लार्वा को पर्याप्त भोजन मिले, सैकड़ों अंडे एक साथ देती हैं। यह अंडे मक्खी गोबर, मिट्टी, पानी, पत्तों, मरे हुए जीवों या जीवित जानवरों के शरीर में देती हैं। इन अंडों में से निकलने वाले लारवा भुक्खड़ की तरह खाते हैं। मक्खी के लारवा वास्तविक मक्खी से बिल्कुल भिन्न होते हैं। इन्हें मैगोट कहते हैं। उनमें शरीर में केवल धड़ होता है और यह हरदम खाते रहते हैं। मक्खी के लार्वा छोटे जीवाणु, पौधे, गोबर मरे हुए प्राणियों या फिर जीवित प्राणियों का माँस खाते हैं।

यह लार्वा प्यूपा बन जाते हैं फिर वयस्क मक्खी। एक वयस्क मक्खी के शरीर के ३ भाग होते हैं– सिर, छाती और पेट। सिर पर एक जोड़ी आँखें और भोजन चूसने के लिए एक अंग होता है। इनके बीच में एक जोड़ी एंटीना होता है। छाती से ६ टाँगें और दो पंख जुड़े हुए होते हैं तथा पेट में बाकी सभी अंदरूनी अंग होते हैं।

मक्खी का मुँह तरल पदार्थ खाने योग्य होता है। उसके मुँह में नलियाँ होती हैं। जिसके किनारों पर नरम गद्दियाँ होती हैं। वह इन्हीं द्वारा भोजन का रस चूस लेती है। मक्खी की स्वाद कलिकाएँ उसके पैरों के नीचे होती हैं इसलिए वह पहले भोजन पर बैठकर उसका स्वाद चखती है। फिर मुँह की नलियाँ भोजन में डालकर उसका रस चूस लेती है। ठोस आहार करते समय वह एक रस टपकाती है फिर उसमें खुले हुए भोजन के रस को चूस लेती है। मक्खी की खानपान की आदतों के कारण पेट की सभी बीमारियाँ, हैजा इत्यादि फैलते हैं।

खून चूसने वाली मक्खियों के मुँह में ऐसे भाग होते हैं जिससे वह अपने शिकार के शरीर में छेद कर लेती है। मक्खी के उसी भाग में से एक ऐसा द्रव्य निकलता है जो शिकार के खून को जमने नहीं देता है और वह मक्खी में मुँह में प्रवाहित होता रहता है। कई मक्खियाँ जहर भी उगलती हैं जिनसे घायल होने पर शिकार मर जाता है।

मक्खी के केवल एक जोड़ी पँख होते हैं। पीछे

के एक जोड़ी पँख हॉल्टर के रूप में विकसित हो गए हैं। यह मक्खी की उड़ने की सहायता करते हैं तथा उड़ते समय दिशा बदलने में भी सहायता करते हैं।

कई मक्खियाँ पानी में अंडे देती हैं। जब अंडों में से लार्वा निकलते हैं तो वे सतह पर तैरते हैं। तैरते समय उनका सिर नीचे और नीचे का भाग ऊपर रहता है। वे लार्वा एक नली द्वारा साँस लेते हैं जो कि उनके पेट से जुड़ी रहती है। उसका दूसरा भाग पानी से बाहर हवा में रहता है। वयस्क मक्खी बनते ही वह हवा में उड़ जाती है।

घरेलू मक्खी के अलावा और भी बहुत प्रकार की मक्खियाँ होती हैं– जैसे ड्रेगन–क्लाई, कैडीस फ्लाई, मे–फ्लाई और लेसावगंस। इन सबकी शारीरिक संरचना और भोजन प्रणाली भिन्न–भिन्न होते हैं।

आप यह सोचकर हैरान होते होंगे कि बरसात के दिनों और गर्मी के मौसम में भिनभिनाने वाली मक्खियाँ आखिर सर्दी के मौसम में कहाँ जातीं हैं। चलो हम आपको बताते हैं कि अधिकांश मक्खियों का जीवन काल गर्मी और बसंत ऋतु के बाद समाप्त हो जाता है। सर्दी आते–आते वे मर जाती हैं। कुछ मक्खियाँ घरों की शांत जगहों, खंडहरों या खेतों में छिप जाती हैं। वे सर्दी में भोजन नहीं करतीं ठीक उसी तरह जैसे गिलहरियाँ, छिपकलियाँ सर्दी के दिन सोते हुए बिताती हैं।

परन्तु सर्दी का दिन कुछ गर्म हो जाए तो उनकी नींद टूट जाती है और वे भूख के मारे भोजन की खोज करती हैं। गर्मी समाप्त होने पर वे फिर छिपने का स्थान ढूँढ़ती हैं पर अधिकतर ठंड से मारी जाती हैं। कई मक्खियाँ हवा में घूमते हुए कीटाणुओं से बीमार होकर मर जाती हैं। खिड़कियों आदि में मरी हुई मक्खियाँ इसी प्रकार मरती हैं।

जो मक्खी सर्दी सहन कर जीवित रह जाती हैं वह इतने अंडे देती हैं कि मक्खियों की संख्या फिर पहले जितनी हो जाती हैं। तो यदि हम वसंत ऋतु या सर्दी में एक मक्खी मर जाए तो इसका अर्थ है कि गर्मियों की बहुत सारी मक्खियाँ मर गई हैं।

बहुत से कीट सुन सकते हैं किन्तु मक्खी सुन नहीं सकती। यह आश्चर्य की बात है कि मक्खियों की तंत्रिका प्रणाली हमारी तंत्रिका प्रणाली से हर रूप में अच्छी होती है पर श्रवण शक्ति कमजोर होती है यानि कि वह सुन नहीं सकती। मक्खियाँ सुन तो नहीं सकती परन्तु उनकी आँखें हमारी आँखों से अधिक दिशा में एक साथ देख सकती हैं क्योंकि उनकी आँखें गोल और उभरी हुई होती हैं। मक्खी सभी दिशाओं में एक साथ नहीं देख सकती क्योंकि उसकी आँख का एक भाग सिर के साथ जुड़ा होता है। आपने मक्खियों को छत पर उल्टा लटककर चलते हुए तो देखा ही होगा। यह भी मक्खियों की एक विशेषता है।

मक्खियों के पैरों पर गद्दियाँ होती हैं। उन पर छोटे–छोटे बाल होते हैं और आगे का भाग गोल होता है। कई वैज्ञानिकों के अनुसार आगे का गोल भाग जो कि भोजन चूसने के काम आता है, जब मक्खी छत पर चलती है, दबाव पड़ने से ठीक उसी प्रकार काम करता है जैसे कोई हवा रहित बर्तन यानि की दबाव बढ़ने से उसकी हवा निकल जाती है और हवा रहित होने के कारण मक्खी के पैर छत से चिपक जाते हैं जिससे वह गिरती नहीं है। कुछ के अनुसार मक्खियों के पैरों में एक चिपचिपा पदार्थ निकलता है। जब वह छत पर उल्टा चलती हैं तो दबाव पड़ने से चिपचिपा पदार्थ आवश्यकता अनुसार निकलता रहता है और वही मक्खी को गिरने नहीं देता है। कुछ भी हो कि यह साहसिक कार्य करती है तो ऐसा लगता है कि वह गुरुत्वाकर्षण बल को मात दे रही है।

छू लिया तार

– रजनीकांत शुक्ल

उस दिन भी सभी बच्चे प्रतिदिन की तरह शाला के प्रार्थना स्थल पर जमा हो गए थे। ईश प्रार्थना के बाद एक बच्चे के द्वारा **'आज का विचार'** और दूसरे के द्वारा **'आज के समाचार'** सुनाए गए।

नैतिक शिक्षा में एक अध्यापक ने बताया कि हमें एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। सहयोग से ही जीवन चलता है। कोई भी अपने प्रयोग की चीज का उदाहरण ले लो। फिर इसके बारे में सोचकर देखो कि उसकी शुरुआत से हम तक आने में कितने लोगों का श्रम लगा है। जीवन सहयोग का ही दूसरा नाम है।

यह वर्ष २००२ की सत्रह जनवरी का दिन था। प्रतिदिन की तरह उस दिन भी विद्यालय अपने नियमित तरीके से शुरु हुआ था। यह सप्ताह के बीच का अर्थात् कि गुरुवार का दिन था। स्थान था उत्तर प्रदेश राज्य की राजधानी लखनऊ।

सुबह प्रार्थना के बाद सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में पंक्तिबद्ध होकर चले गए और कक्षाओं में नियमित ढंग से शिक्षण शुरु हो गया। कालांश समाप्त हुआ तो अध्यापक अपनी कक्षाओं से निकलकर बाहर आने लगे। उनके साथ ही शोरगुल की आवाजें सुनाई देनी शुरु हो गईं। पहले अध्यापक के जाने और दूसरे अध्यापक के कक्षा में प्रवेश करने के बीच का कुछ समय होता है। जो छात्रों का अपना होता है। इसमें वे शीघ्र ही पानी पीने या लघुशंका करने आदि के कार्यों से निवृत्त हो लेते हैं। ताकि अगले कालांश में निश्चिन्त होकर पढ़ाए गए पाठ को समझ सकें।

ऐसे ही एक समय में दोपहर को एक छात्र अंकित कुमार साहू विद्यालय की दूसरी मंजिल पर खड़ा था।

शाला का भवन सड़क के साथ ही लगा हुआ था। उसके पास ही सड़क पर बिजली के खंबे खड़े थे जिन पर लगे तार शाला के भवन के पास से होकर जा रहे थे। जिनमें से होकर बिजली का करंट दौड़ता था।

अंकित ने पता नहीं कैसे क्या किया, वह उस बिजली के तार से छू गया। इससे पहले कभी कोई ऐसी घटना नहीं हुई थी। अंकित से जैसे ही तार छुआ वह करंट से चिपक गया।

मैदान में खड़े बच्चों ने देखा तो शोर मचा दिया। बात ही बात में सारे शाला में हँगामा हो गया। बच्चों के शोर को सुनकर अगल-बगल के कमरों से निकलकर दूसरे अन्य बच्चे और अध्यापक बाहर आ गए। जरा सी देर में वहाँ पर भीड़ लग गई।

जितने मुँह उतनी बातें हो रहीं थी। कितने सारे

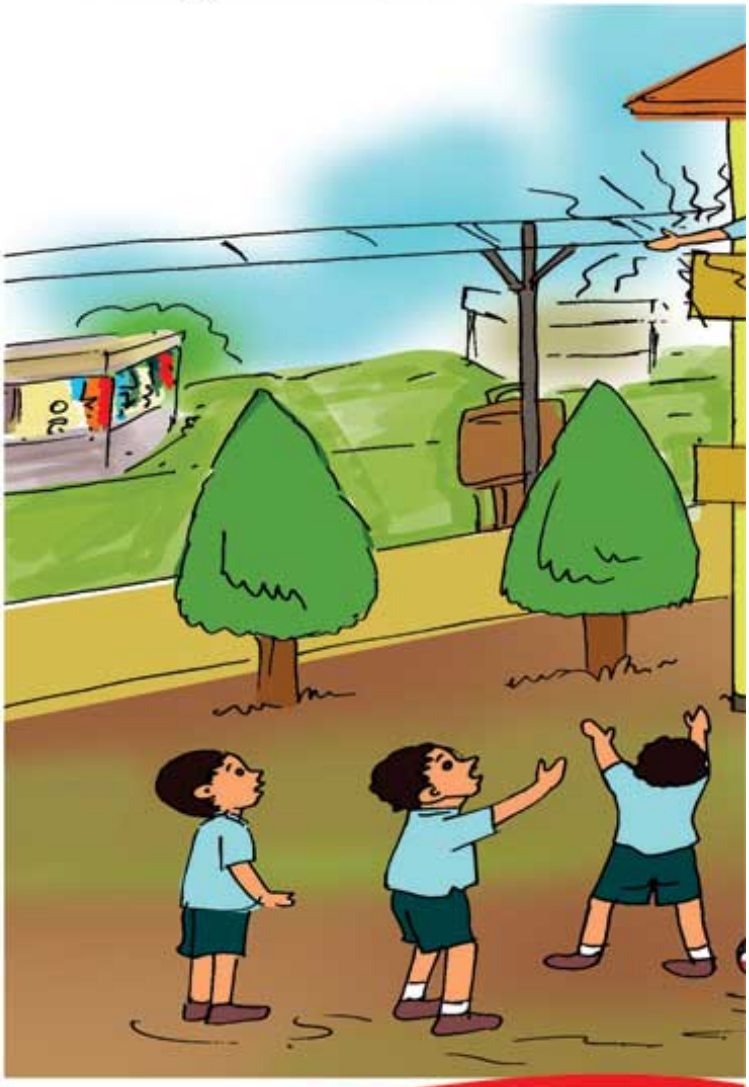

सुझाव निकल-निकलकर उनके बीच से आने लगे। किन्तु उस भीड़ में से कोई भी उस समय ऐसा नहीं था जो ऐसी परिस्थिति में आगे बढ़कर समस्या का समाधान करता।

अधिक समय तक ऐसा नहीं रह सकता था। पल-पल देर होती जा रही थी। सामने बिजली से चिपका हुआ अंकित था और सामने तमाशा देखती हुई भीड़। यही वह समय था जब उस भीड़ के बीच से निकलकर एक बड़ी कक्षा का लड़का एकदम से आगे आया। सबने देखा कि वह सोलह वर्ष का अशोक कुमार चौधरी था।

वह साहस करके आगे बढ़ा और उसने अंकित के पैरों से पकड़कर उसे खींच लेना चाहा ताकि वह बिजली के चंगुल से छूट जाए। किन्तु उसे इस बात का भान नहीं रहा कि जिस कारण से अंकित उस बिजली के तार की चपेट में आया था वह कारण अभी भी वहाँ उपस्थित था। वह छत गीली थी और उनसे होकर करंट अंकित के पैरों में आ रहा था।

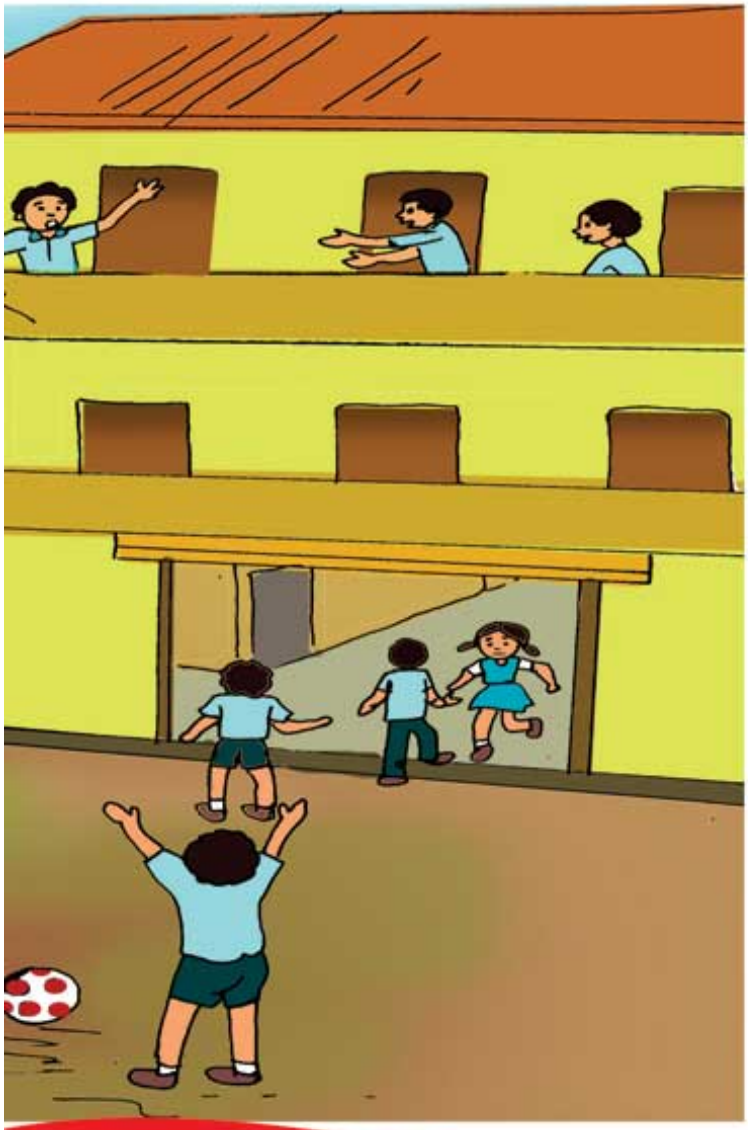

अशोक का यह प्रयास विफल हो गया। लेकिन उसने साहस नहीं छोड़ा। सूखी दीवार का सहारा लिया और एक बार फिर प्रयत्न किया। उसने अंकित को जोर लगाकर पूरी ताकत से धक्का मारा। जिससे वह और अंकित दोनों ही तार से छिटककर दूर जा गिरे।

जिसे देखकर सभी दौड़ते हुए उन दोनों तक पहुँचे और उन्हें उठाया। करंट के प्रभाव से उनकी विशेषकर अंकित की हालत अभी खराब थी। शीघ्र ही उन दोनों को चिकित्सालय ले जाया गया। वहाँ समय पर सही उपचार मिल जाने से वे दोनों स्वस्थ हो गए।

अशोक ने अपने साहस से आगे बढ़कर अंकित की बिजली के करंट से बचाकर उसकी प्राण रक्षा की। उसकी हिम्मत और साहस से जान बचाने की इस बहादुरी के कारण से उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया।

अशोक के नाम को भारतीय बाल कल्याण परिषद् नई दिल्ली के द्वारा वर्ष २००२ के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। २००३ के गणतंत्र दिवस समारोह से पूर्व देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के द्वारा अशोक कुमार चौधरी को यह राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

नन्हें मित्रो!

खड़े नहीं हम रहें, करें हिम्मत आगे बढ़ आएँ,
सूखी धरती के ऊपर हम, बादल बनकर छाएँ।
टिप टिप बरसें हम धरती पर, बन मौसमी घटाएँ,
फूटेंगे धरती से बन हम, जड़ पल्लव शाखाएँ।।

- नई दिल्ली

बुखार ऐसे उतरा

– डॉ. मनोहर भण्डारी

रामू और मोहन केवल सोलह वर्ष के थे। पर उनकी विद्या के कारण बड़े भी उनका मान करने लगे थे। वे हर सोलहवें दिन डॉ. जोशी से मिलने जाते थे। सारी बातें बताते। पेटी में जो सामान कम हो जाता वह शहर से ले आते। गाँववालों का दिया पैसा इस तरह काम में आता था।

डॉक्टर साहब उनको हर बार कुछ नई बातें सिखाते थे। डॉक्टर जोशी के कहने से गंगाधर जी ने अपने घर का कमरा खाली कर दिया था। रामू और मोहन ने इस कमरे को दवाखाना बना दिया। किराने की दुकान वाले रतनलाल ने एक छोटी अलमारी दे दी। दोनों ने अलमारी में दवाएँ रख दी। वे दोनों सुबह–शाम अपने दवाखाने में बैठते थे।

एक दिन वे दोनों अपने–अपने खेत में काम कर रहे थे। दोनों के खेत पास–पास थे। इतने में रामू का पड़ौसी दौड़ा–दौड़ा आया। उसने बताया कि रतनलाल की छोटी लड़की गीता को बहुत तेज बुखार है। तुम इसी समय चलो।

रतनलाल के यहाँ जाकर दोनों ने देखा कि गीता के आस–पास बहुत लोग हैं। खिड़की दरवाजे बंद हैं। गीता को रजाई में लपेट रखा है। इस तरह गीता को जरा भी हवा नहीं मिल रही थी। रतनलाल की घर वाली सीता घबराई हुई थी।

रामू और मोहन ने वहाँ से लोगों को हटाया। खिड़की दरवाजे खुलवाए। गीता के ऊपर से रजाई हटाई। रामू ने बुखार नापा। बुखार बहुत तेज था। मोहन इतने में ठण्डे पानी से भरा एक बर्तन ले आया। कपड़े के छोटे–छोटे टुकड़े उसमें डाल दिए।

वह उन टुकड़ों को पानी में भिगोकर तथा निचौड़ कर गीता के शरीर पर रखने लगा। मोहन माथे, हाथ, पेट और पैरों के तलुओं पर कपड़े रखता और उनको बदलता जा रहा था। रामू के कहने से रतनलाल हाथ पंखे से हवा कर रहा था। तेज बुखार के कारण गीले कपड़े शरीर पर रखते ही सूख जाते थे। मोहन कपड़ों को फिर भिगोता और रखता जा रहा था। इस बीच रामू ने पेटी में से बुखार का घोल निकाला और दो चम्मच दवा गीता को पिला दी। थोड़ी ही देर में बुखार कम होने लगा।

धीरे–धीरे उसका बुखार पूरी तरह उतर गया। सभी बहुत प्रसन्न हुए। रतनलाल के पड़ौसी भूराजी ने रामू से पूछा– ''ठंडे पानी की पट्टियाँ रखने से सर्दी

लग सकती है और निमोनिया हो सकता है क्या?''

रामू ने कहा– ''ऐसी बात नहीं है। तेज बुखार जैसे भी हो कम समय में उतारना चाहिए। नहीं तो बालक को दौरा (झटके) भी आ सकते हैं। तेज बुखार के कारण बीमार आदमी या बालक मर भी सकता है।

भूराजी ने फिर पूछा– ''क्या सब कपड़े उतारना आवश्यक होता है?'' रामू ने कहा– ''शरीर पर जितने कम कपड़े हो ठीक रहता है। रोगी के शरीर पर पानी की पट्टियाँ रखने और उनको बार-बार बदलने तथा हाथ पंखे या बिजली के पंखे की हवा से बुखार कुछ ही समय में कम हो जाता है।''

भूराजी ने जानना चाहा– ''बुखार में उपचार के लिए और क्या-क्या देना चाहिए?''

रामू ने कहा– ''यदि पास में हो तो पेरासिटामाल (मेटासिन) की एक गोली या पीने की दवा उसी समय देना चाहिए।''

भूराजी ने पूछा– ''क्या बुखार में खाना नहीं खाना चाहिए?''

रामू ने बताया– ''ऐसी बात नहीं है। पानी को उबालकर ठंडा कर लें। इस पानी में शकर या गुड़ तथा चुटकी भर नमक मिला लें। फिर उसमें से थोड़ा-थोड़ा पानी देना चाहिए। बाद में उसे हल्का भोजन देना चाहिए।''

भूराजी ने पूछा– ''हल्का भोजन कौन-सा होता है?''

रामू ने बताया– ''दलिया, मूँग की दाल, खिचड़ी हलके भोजन में गिने जाते हैं और कम समय में पच जाते हैं।''

भूराजी ने पूछा– ''क्या गीता को अब डॉक्टर साहब के पास ले जाना होगा?''

रामू ने कहा– ''हाँ, गीता को डॉक्टर साहब के पास ले जाना आवश्यक है। वे बीमारी (बुखार) का कारण जानकर, उसके अनुसार पाँच-सात दिन की दवा दे देंगे।'' **(शेष अगले अंक में)**

याद रहे

संपति गई तो कुछ नहीं,
स्वास्थ्य गए से हानि।
नाश, चरित्र के पतन से,
कहे संत सुधी ज्ञानी।।

सच्चा मित्र

– बलदाऊ राम साहू

प्रणव ने आठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर नवीं कक्षा में प्रवेश किया। दूसरे विद्यालय में प्रवेश लेने के कारण उसके कुछ पुराने मित्र छूट गए तो कुछ नए मित्र भी बन गए। नए मित्रों में सौरभ उसका सबसे प्यारा मित्र था। सौरभ के पिता स्थानीय जिला न्यायालय में न्यायाधीश थे, इसलिए विद्यालय में सौरभ का रुतबा कुछ अधिक ही था। वह निर्धन बच्चों को अपने आसपास फटकने तक नहीं देता और उसने अपनी नई मित्र मंडली बना ली थी। जिसमें प्रणव भी शामिल था। प्रणव के पिता स्थानीय महाविद्यालय में प्राध्यापक थे।

प्रणव पढ़ाई–लिखाई में सबसे आगे रहता था। पिछले वर्ष उसने अपनी कक्षा में सर्वोच्च अंक पाए थे। प्रणव की एक अच्छी आदत थी कि वह अपने सभी मित्रों को अपेक्षित सहयोग करता था। जब भी उसके किसी मित्र से कोई प्रश्न नहीं बन पाता वह उसे झटपट हल कर देता, इसलिए उसे अपने मित्रों को बहुत शाबासी मिलती। वह पढ़ाई–लिखाई में सौरभ की भी सहायता करता। बदले में सौरभ उसे कभी होटल या रेस्टॉरेंट में ले जाकर नाश्ता करा देता, तो कभी उसे पिक्चर दिखा देता, लेकिन प्रणव की उससे इस तरह की कोई अपेक्षा नहीं होती। वह तो अपने मित्रों की ऐसी सहायता करता था। सिनेमा घर के मालिक सौरभ को पहचानते थे, इसीलिए उसे बिना टिकिट लिए उच्च श्रेणी में बैठा देते थे और मध्यांतर में उसके लिए कुछ खाने की वस्तु भी आ जाती।

सौरभ इसे अपना बड़प्पन समझता था। यह सब देखकर प्रणव भी बहुत प्रभावित होता।

प्रणव के पिता महाविद्यालय में प्राध्यापक थे। यह सभी जानते थे, लेकिन उसे सौरभ की तरह कोई महत्व नहीं मिलता। कभी–कभी उसके पिता के कोई पुराने शिष्य मिल जाएँ तब अलग बात थी। वे उनके पिता को चाय के लिए अवश्य आग्रह करते थे और यदि प्रणव साथ में हो तो उसे पाँच या दस रुपए का चॉकलेट दिला देते।

प्रणव अभी छोटा था इसलिए वह यह नहीं समझ पाता।

पर सोचता अवश्य था। ऐसी क्या बात थी कि सौरभ को जितना सम्मान मिलता है, उतना उसे तो छोड़ो उसके पिता को भी नहीं मिलता जबकि उसके पिता की आमदनी भी कोई कम नहीं थी। प्रत्येक माह डेढ़ लाख का वेतन था और वे भी ठाठ से रहते थे। उन्हें बहुत विद्वान प्राध्यापक के रूप में जाना जाता था।

वर्ष का आधा समय बीत गया। छः माही परीक्षा की तैयारी में सभी बच्चे लग गए। मित्रों से मिलना-जुलना भी कम हो गया, किंतु प्रणव और सौरव के बीच मिलना-जुलना जारी था। कभी प्रणव सौरभ के घर चल देता तो कभी सौरभ प्रणव के घर आ जाता। दोनों के माता-पिता एक-दूसरे के घर आने-जाने के लिए मना नहीं करते। वे जानते थे कि बच्चे पढ़ाई-लिखाई में लगे रहते हैं। हाँ, कुछ समय अवश्य मनोरंजन कर लेते हैं।

रविवार का दिन था। सौरभ अपनी एक्टिवा लेकर प्रणव के घर आया। सौरभ ने कहा- ''आओ! आज मॉल में अच्छी मूवी आई है, चलें।''

''नहीं भाई! कल परीक्षा है, आज मूवी देखना उचित नहीं होगा।''

''क्यों अपनी तो तैयारी पूरी है न!''

''फिर भी जब मूवी देखकर आएँगे, तो ध्यान

उसी में लगा रहेगा।''

''अरे नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा।''

''तू बुरा मत मानना, मेरे माता-पिता भी इसकी अनुमति नहीं देंगे।'' प्रणव का पहली बार इस प्रकार मना करना सौरभ को अच्छा तो नहीं लगा लेकिन वह, ठीक है मित्र, कोई बात नहीं और कभी, कहकर लौट आया।

सौरभ और प्रणव के बीच अच्छी मित्रता थी, इसीलिए छोटी-मोटी बातों का वे बुरा नहीं मानते। सौरभ के जाने के बाद प्रणव अपने पढ़ाई के कमरे में जाकर तैयारी में जुट गया। सौरभ भी घर जाकर फिर से पुस्तक उलटने-पलटने लगा। सभी प्रश्नों को हल करके देखना तो संभव नहीं था किन्तु महत्वपूर्ण प्रश्नों को हल करना आवश्यक था। सौरभ ने ऐसे प्रश्नों को पहले से ही चिह्नित कर रखा था जो परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे।

उसे ज्ञात था कि प्रणव की मित्रता से उसकी भी पढ़ाई-लिखाई में बहुत सुधार हुआ था। दो घंटे पढ़ने के बाद सौरभ को लगा कि कुछ ऐसे भी प्रश्नों को देख लिया जाए जिसे उसने उतना महत्वपूर्ण नहीं माना था। पर क्या पता परीक्षक उसी में से कुछ प्रश्न पूछ लें। सौरभ जैसे-जैसे पन्ने उलटते जाता ऐसे प्रश्नों में उलझता जाता और प्रणव को फोन लगा-लगाकर प्रश्नों के उत्तर पूछ लेता और प्रणव भी लगातार बता रहा था।

जब सौरभ का लगातार इस तरह के प्रश्न पूछना जारी रहा, तब प्रणव ने कुछ नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा- ''अरे! तुम तो मूवी देखने के लिए जाने वाले थे न? यदि मूवी देखने गए होते तो क्या इन प्रश्नों का हल मिल जाता?''

''हाँ भाई! बड़ी भूल हो जाती। मुझे तो लग रहा था कि मेरी पूरी तैयारी हो गई है। मैंने यह सोचा था कि मूवी देखकर मूड़ अच्छा हो जाएगा और हम कल अच्छे से परीक्षा देंगे।''

''मित्र! आगे बढ़ना है तो अपनी आदतों को नियंत्रित करना सीखो, अन्यथा बाद में पछताने से कोई लाभ नहीं होगा। हिंदी व्याकरण में एक कहावत पड़ी है न– 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'''

सौरभ ने कहा– ''अरे! तू तो आज बड़ी–बड़ी बातें कर रहा है। हाँ भाई! मुझसे भूल हो गई थी, क्षमा करना, भविष्य में इन बातों पर अवश्य ध्यान दूँगा।''

इस घटना के बाद सौरभ को प्रणव अपना मित्र ही नहीं, हितचिंतक लगने लगा और सौरभ के प्रति उसका सम्मान और बढ़ गया।

धीरे–धीरे समय बीतता गया। परीक्षा समाप्त हो गई। परीक्षा के परिणाम भी आ गए। प्रणव कक्षा में पहले स्थान पर आया तो सौरभ पाँचवें। सौरभ को यह बहुत बुरा लगा। उसे लग रहा था कि उसने इस बार मेहनत तो ठीक ही की थी, पर पाँचवाँ स्थान कैसे? रोहित दूसरा, पूजा तीसरा और चौथे स्थान पर कृतिका रही।

रोहित बड़े ही निर्धन परिवार का बच्चा था। उसके पास आधुनिक सुविधा तो दूर, पढ़ाई की आवश्यक सामग्री भी वह बड़ी कठिनाई से जुटा पाता था, लेकिन अपनी पढ़ाई–लिखाई वह बड़ी लगन से करता।

सौरभ, रोहित के रहन–सहन को देखकर चिढ़ता था, पर रोहित को किसी से कोई शिकायत नहीं थी। वह अपने में संतुष्ट और किसी की चिंता किए बिना अपना कार्य पूरी लगन और परिश्रम के साथ करता रहता था।

रोहित की प्रतिभा को जानकर सौरभ की सोच में परिवर्तन आया। अब वह उसमें संभावनाएँ देखने लगा था। उसे लगने लगा था कि उसे किसी को हीन भावना से नहीं देखना चाहिए। सौरभ के मन में किसी के प्रति कोई ईर्ष्या का भाव नहीं था, परन्तु अपने प्रति हीन भावना अवश्य पैदा हुई।

विद्यालय के बाद सभी बच्चे अपने–अपने घर जाने लगे।

सौरभ ने प्रणव से कहा– ''मित्र! अभी मेरा घर जाने का मन नहीं कर रहा है।''

''तो मेरे घर चल।''

सौरभ ''हाँ।'' कहकर चलने के लिए तैयार हो गया। सौरभ हमेशा अपनी एक्टिवा लेकर आता जबकि प्रणव पैदल ही विद्यालय आता था। उसका घर भी विद्यालय के पास ही था। वह सोचता था कि इसी बहाने कुछ पैदल चलना भी हो जाएगा। सौरभ ने प्रणव को पीछे की सीट पर बैठने के लिए कहा। घर पहुँचने तक दोनों चुप ही रहे। जिस समय प्रणव और सौरभ घर पहुँचे। उस समय प्रणव की माताजी द्वार पर ही थी। दोनों को आते देखकर वे मुस्कुराकर बोलीं–

''आओ बेटा! चलो हाथ–मुँह धो लो, मैं तुम दोनों के लिए नाश्ता लगा देती हूँ।''

प्रणव के पीछे–पीछे सौरभ भी उसके कमरे में चला गया। सौरभ के लिए प्रणव का घर कोई अनजाना नहीं था, पर उसे आज कुछ अलग–सा अनुभव हो रहा था। प्रणव जाते ही अपना बस्ता रखकर हाथ–मुँह धोने चला गया। जब तक प्रणव वापस आता, प्रणव की माताजी ने दोनों के लिए नाश्ता लगा दिया।

''जाओ बेटा! तुम दूसरे बाथरूम में हाथ–मुँह धो लो।'' सौरभ को भी प्रणव की माँ ने कहा।

''ठीक है काकी!''

प्रणव जब वहाँ आया तो सौरभ वैसे ही मुँह लटकाए बैठा था। ''चल मित्र! जल्दी हाथ–मुँह धो ले, फिर कुछ नया करने के बारे में सोचते हैं।''

''मेरा मन आज कुछ करने का नहीं है।''

''पहले नाश्ता कर लेते हैं, फिर बाद में बातें करेंगे।''

सौरभ के हाथ–मुँह धोकर आने के बाद दोनों नाश्ता कर ही रहे थे कि प्रणव की माताजी दोनों के

लिए चाय ले आई। दोनों ने चाय पी। माँ के जाने के बाद प्रणव ने कहा– ''बता क्या बात है, यही न कि तू पाँचवाँ कैसे आ गया?''

''हाँ!''

''पिछले वर्ष तुम्हारा कौन–सा स्थान था?''

''दसवाँ।''

''अब?''

''पाँचवाँ।''

''तो पिछले वर्ष से तू पाँच सीढ़ी आगे बढ़ा है न, तुझे तो प्रसन्न होना चाहिए।''

प्रणव ने आगे कहा– ''देखो, कभी भी अपनी तुलना दूसरों से नहीं करनी चाहिए। जब हम अपनी तुलना दूसरों से करते हैं तभी हमें दु:ख होता है। पर जब हम अपनी तुलना स्वयं से करते हैं तो हमें पता चलता है कि हमने कितना पाया है या फिर खोया है।''

''दूसरी बात असफलता का अर्थ समझता है?''

''नहीं!''

''असफलता का अर्थ है सफलता के लिए ईमानदारी से प्रयत्न नहीं किया जाना। तुमने परिश्रम किया था न? फिर, बस।''

प्रणव ने आगे फिर कहा, ''चिंता उन्हें करनी चाहिए जिन्होंने असफलता के भय से परीक्षा ही नहीं दी थी। या फिर परीक्षा के लिए अपनी पूरी तैयारी न की हो। यह तो अच्छा है यह छ: माही परीक्षा है। हमें पता चल गया हम कितने गहरे पानी में हैं। मैं जानता हूँ मुझे भी अपेक्षित अंक नहीं मिले हैं। अभी तो वार्षिक परीक्षा शेष है, अच्छी तैयारी करनी होगी। निश्चय ही अच्छे परिणाम आएँगे।''

''एक बात और सुन यदि तू मानता है कि मैं असफल हो गया हूँ, तो बता संसार में बिना असफल हुए सफलता किसने पाई है। और असफलता तो सफलता की पहली सीढ़ी है।''

''अरे भाई! तू तो बड़ों जैसी बातें कर रहा है। यह सब तुझे किसने बताया?''

''हाँ! बतलाता हूँ, एक तो मैं अपनी पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त दूसरी पुस्तकें पढ़ता हूँ और दूसरी मुझे पिताजी भी इस प्रकार के कुछ ज्ञान देते हैं।''

''अच्छा! यह तुम्हें काकाजी बताते हैं।''

''हाँ, मेरे पिताजी तो मुझे बहुत कुछ बताते हैं।''

''मेरे पिताजी तो मुझे यह सब नहीं बताते।''

''तू अपने पिताजी के पास बैठता है? नहीं तो वे कैसे बताएँगे।''

''वे तो कार्यालय से आने के बाद अपने पुस्तकालय में घुसे रहते हैं। तो मैं उनके पास जाऊँ कैसे?''

''यही तो अंतर है, तुझमें और मुझमें। पिताजी जब महाविद्यालय से आते हैं तब मैं उनके साथ कुछ समय बिताता हूँ। कभी कुछ खेल लेते हैं, तो कभी किसी विषय पर बातें कर लेते हैं। माँ हमेशा हमारे साथ भागीदारी कर लेतीं हैं।''

''हमारे यहाँ तो हम तीन लोग हैं और तीनों की अलग–अलग दुनिया है। मैं अपने कमरे में, पिताजी अपने पुस्तकालय में और माँ रसोई में या पड़ौसी महिलाओं के साथ।''

''अच्छा! कल से तू भी ऐसा करना, जब काका जी आए तो उनके पास जाकर बैठना। देखना कैसे बदलाव आता है। वे अवश्य ही तुमसे बातें करेंगे। तुम्हें कुछ समझाएँगे। तुम्हारे बारे में कुछ जानना चाहेंगे, तुम्हारे और काका के बीच बातचीत आरंभ हो जाएगी और वे तुम्हें नई–नई बातें बताएँगे।''

''सच! तुमने तो मेरा तनाव ही दूर कर दिया। कल से नहीं आज से ही मैं ऐसा करता हूँ। सही में तू मेरा सच्चा मित्र है।''

दोनों खिल–खिलाकर हँस पड़े।

– पोटिया चौक, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

पुस्तक परिचय

डॉ. राकेश चक्र हिन्दी बाल साहित्य जगत के जाने-माने लेखक हैं। आपकी विभिन्न विधाओं में अनेक पुस्तकें निरंतर प्रकाशित होती रहती हैं। इस बार चक्र जी आपके लिए लाए हैं बाल कविताओं की चार महत्वपूर्ण पुस्तकें जिन्हें प्रकाशित किया है लवकुश सिंह सेहबर पुर, रतनपुरा, जिला मऊ (उ. प्र.) २२१७०६ ने। सभी पुस्तकें सुन्दर रेखा चित्रों से सज्जित हैं।

रोचक बाल कविताएँ
मूल्य ५९५/-

मौसम, प्रकृति, पशु-पक्षियों पेड़-पौधों पर केन्द्रित कविताएँ।

मन भावन किशोर कविताएँ
मूल्य ४९५/-

प्रकृति, देशप्रेम, स्वतंत्रता सेनानियों, महापुरुषों पर केन्द्रित कविताएँ।

ज्ञानवर्द्धक मनोरंजक बाल किशोर कविताएँ
मूल्य ५९५/-

इनमें किशोर होते बच्चों के लिए पर्याप्त मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन की क्षमता भी है।

मेरी चुनिंदा बाल कविताएँ
मूल्य ५९५/-

मनोरंजन, प्रेरणा, स्वास्थ्य व देशभक्ति से रची पगी कविताएँ।

बचपन रसगुल्लों का दोना
मूल्य २५०/-

श्री सुरेश कुशवाहा 'तन्मय' ने ९० से अधिक सुन्दर-सुन्दर बाल गीत संजोए हैं जो सचमुच रसगुल्लों से रसीले हैं।

आपको सहज याद होने व गुदगुदाने वाले बाल गीतों की यह महत्वपूर्ण कृति है।

प्रकाशक- आई सेक्ट पब्लिकेशन
२५-ए-प्रेस कॉम्प्लेक्स एम. पी. नगर, जोन-१
भोपाल-४६२०११ (म. प्र.)

पंख मुझे मिल जाते
मूल्य १५०/-

हिन्दी बाल साहित्य संसार में एक महत्वपूर्ण रचनाकार है उषा सोमानी। आपकी रसमयी कलम से निकली सुन्दर-सुन्दर बाल कविताओं का फूलों के गुलदस्ते जैसा मनभावन संकलन है यह। बाल मन की कल्पना, विचार, अभिलाषा एवं भावों का सुन्दर समन्वय है इन कविताओं में।

प्रकाशक- जी एस पब्लिशर्ष डिस्ट्रीब्यूटर्स, शाहदरा, दिल्ली ११००३२

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- संकेत

शायद तुम्हें नहीं पता हो कि हमारी पृथ्वी
एक बड़े चुम्बक की तरह काम कर रही है.
अगर हम कुतुबनुमा यानि कम्पास धरती पर रखें,
तो चुम्बकीय सुई उत्तर-दक्षिण दिशा
में घूमकर स्थिर हो जाएगी.

वैज्ञानिकों का कहना है कि
इन दिनों पृथ्वी की चुम्बकीय
ताकत घट रही है.
अगर पृथ्वी की चुम्बकीय
ताकत इस रफ्तार से घटती रही,
तो कुछ हजार सालों में दिशा
ज्ञान बिल्कुल गड़बड़ा जाएगा.
कई दूर देशों से हमारे देश आनेवाले
पक्षी रास्ता भटक जाएंगे,
क्योंकि पृथ्वी की चुम्बकीय
ताकत उन्हें सही रास्ता बताती है.

लेकिन, वैज्ञानिकों के अनुसार घबराने की कोई वजह नहीं है,
क्योंकि पृथ्वी पहले भी कई बार चुम्बकीय गुण की
ताकत खो चुकी है और कुछ समय बाद उसका
यह गुण खुद लौट आता है.

ऊँट और सियार

– अरविन्द कुमार 'साहू'

एक ऊँट और एक सियार,
दोनों मित्र बने एक बार।
खाने को मीठे तरबूज,
दोनों चले नदी के पार।।
बोला, ''भैया! इस धरा को,
नहीं कर सकूँगा मैं पार।''
कहा ऊँट ने, ''मेरे रहते,
ऐसी चिन्ता है बेकार।
आओ बैठो मेरे ऊपर,
हो जायेंगे दोनों पार।।''
मिला खेत तो दोनों ने,
लेना शुरू किया आहार।
पेट भर गया जल्दी से,
तब सियार ने लिया डकार।।
कहने लगा, ''ऊँट भैया!
मुझे लगी है अब हुक्कास।
हुंवा–हुंवा कर चीखूँगा,
तभी हजम होगा यह ग्रास।।
ऊँट बहुत घबराया बोला,
''चुप बैठो कहते क्या बात?
भरा नहीं है पेट मेरा पर,
तुमको सूझ रहा उत्पात।।
तनिक देर तक चुप्पी रखो,
मैं भी जी भर खा लूँगा।
फिर तुमको भी लेकर वापस,
अपने जंगल लौटूँगा।।
भरे पेट जब मैं सोऊँगा,
तब तुम भर लेना हुक्कास।
मगर अभी यदि शोर हुआ तो,
रखवाले आयेंगे पास।।
मार पड़ेगी डंडों से तो,
जान के लाले पड़ जायेंगे।
इतना भारी तन लेकर हम,
जल्दी भाग नहीं पायेंगे।।''
लेकिन वह सियार न माना,
भरने लगा खूब हुक्कास।
बोला– ''ये मेरी आदत है,
भैया ऊँट करो विश्वास।।''

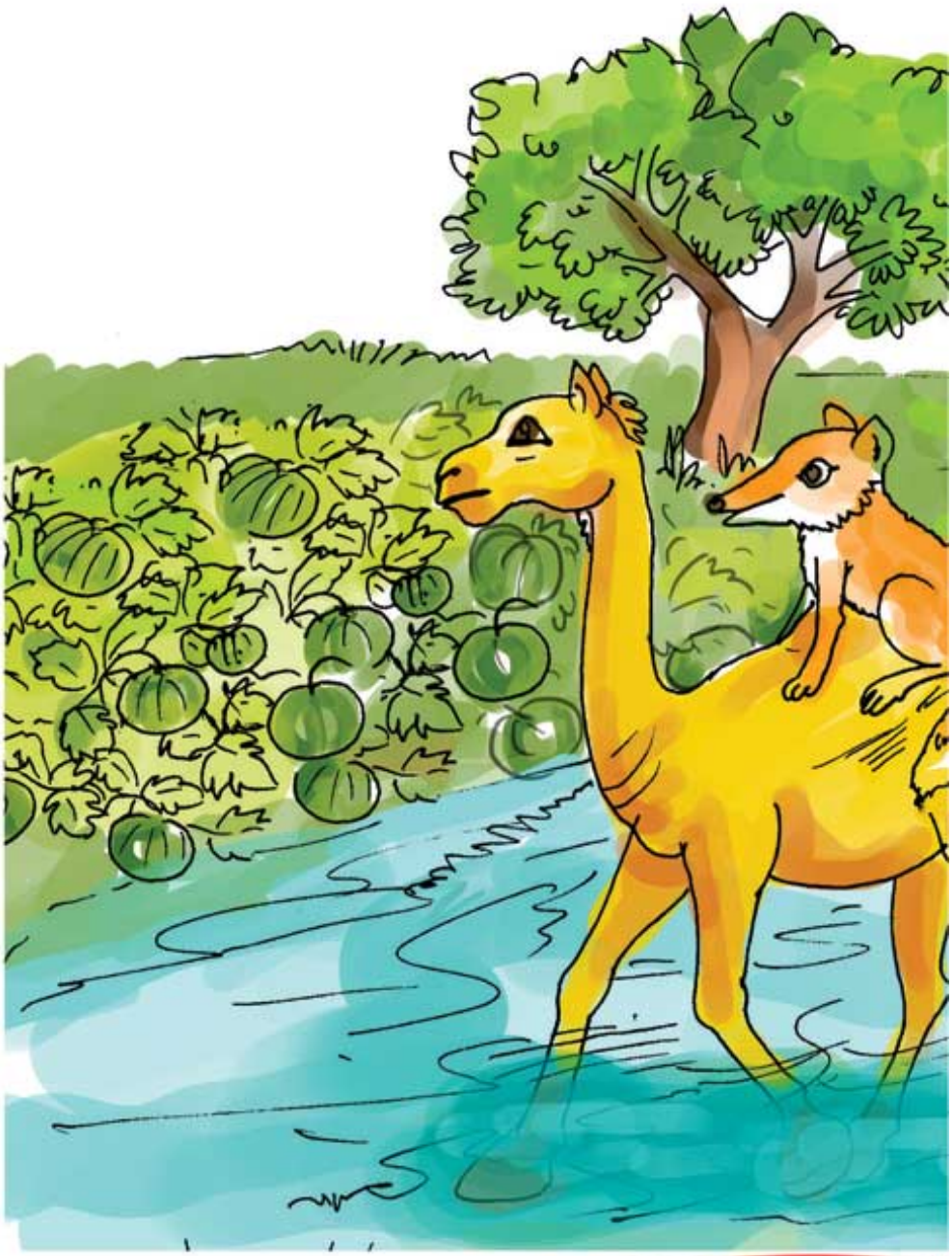

हुंवा-हुंवा का शोर सुना तो,
रखवालों ने दौड़ लगाई।
जान बचा भागा सियार भी,
भूल गई उसकी हुक्काई।।
ऊँट बेचारा इतनी जल्दी,
भाग सका न छुप ही पाया।
जमकर उसकी हुई पिटाई,
जोर-जोर चीखा-चिल्लाया।
किसी तरह जब जान बचाकर,
ऊँट नदी के तट तक आया।।
तब उसने कपटी सियार को,
वहीं प्रतीक्षा करते पाया।
कहा ऊँट से, ''चलो चलें अब,''
फिर वह उछल पीठ पर बैठा।

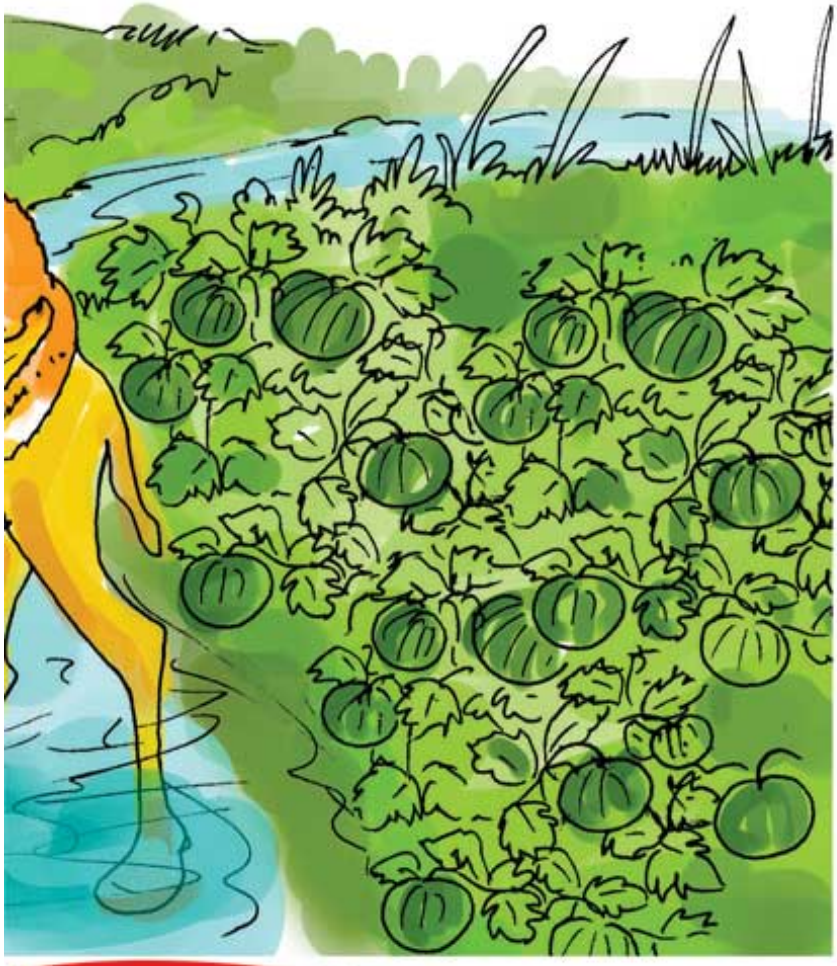

''मेरा पेट तो बहुत भरा है''
यह कहकर मूँछों को ऐंठा।।
ऊँट चला कपटी सियार संग,
लेकिन सोच रहा था ऐसा।
''नहीं मित्रता के लायक यह,
इसे मिले जैसा का तैसा।।''
बीच धार में पहुँच ऊँट ने,
कहा कि ''मुझको बड़ी थकन है।
खूब मार खाने से तन में,
मुझे हो रही बड़ी जलन है।।
लोट-पोट कर ठंडे पानी में,
करना उपचार पड़ेगा।
तुम अपने को स्वयं संभालो,
मुझसे बेहतर यही रहेगा।।''
अब सियार बेहद घबराया,
बोला, ''मैं तो बह जाऊँगा।
तेज धार की नदी है गहरी,
जीवित नहीं निकल पाऊँगा।''
कहा ऊँट ने, ''तूने भी तो,
मेरी बात नहीं मानी है।
तेरी आदत के जैसी ही,
मेरी भी अब मनमानी है।।
नहीं मित्रता के लायक तू,
बहुत कुटिल तेरा यह मन है।
जैसे को तैसा ही मिलता,
इस दुनिया का यही चलन है।।''
इतना कहकर वहीं ऊँट ने,
पानी में फिर लोट लगाई।
बहा सियार तेज धारा में,
भूल गई उसकी हुक्काई।।

– ऊँचाहार,
रायबरेली (उ. प्र.)

हंसने के कारण!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

कविता

सेल्फी का चक्कर

– इंद्रजीत कौशिक

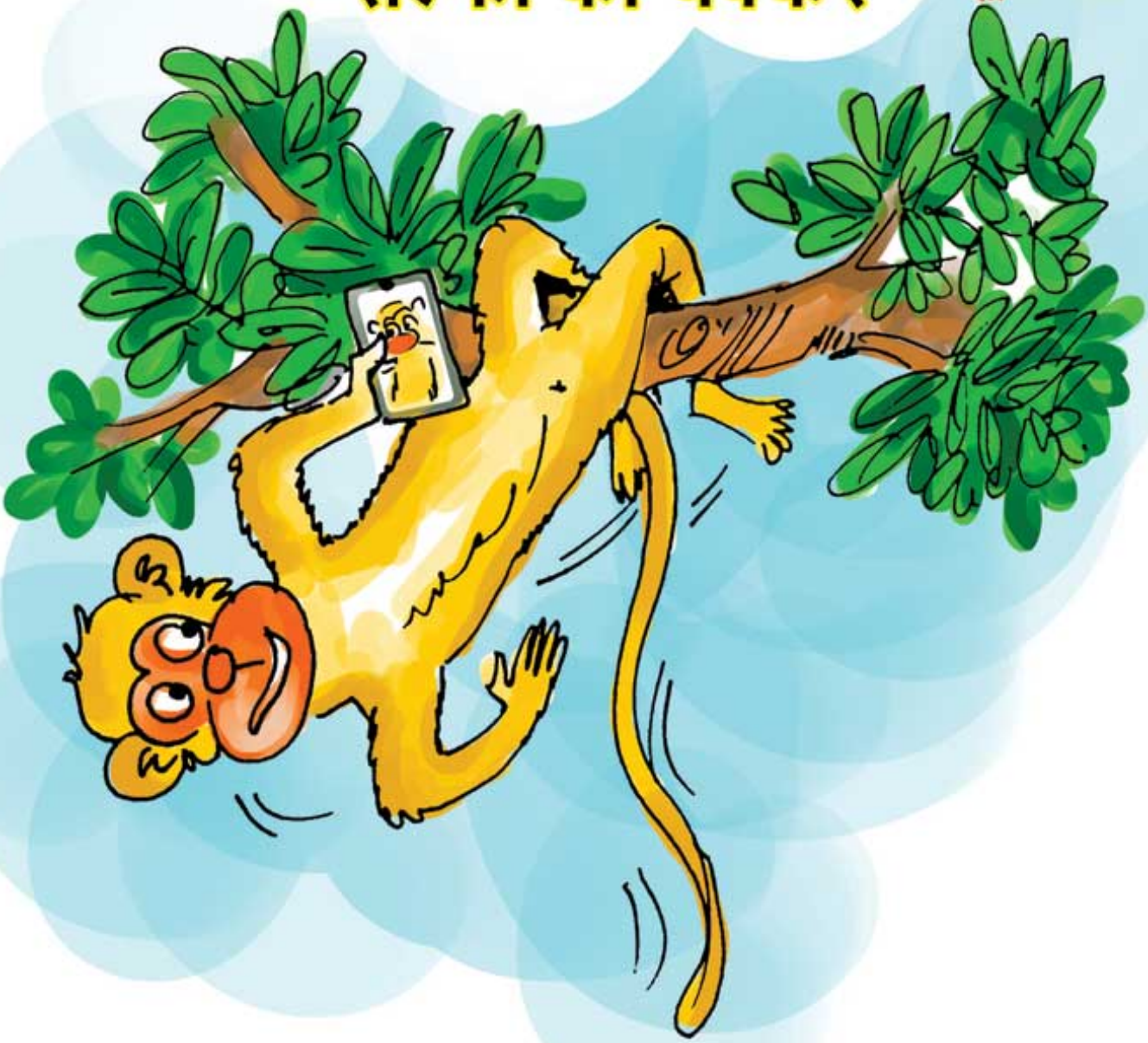

लाओ मुझे मोबाइल दे दो
बोले बंदर मामा,
सर पर टोपी लगा रखी थी
पहना था पाजामा।

सेल्फी लेने के चक्कर में
मामा सब कुछ भूले,
लटके उल्टा एक डाल पर
जोर–जोर से झूले।

कच्ची डाली टूट गई जब
मामा गिरे धड़ाम,
मोबाइल लौटा कर बोले
ना लूँ इसका का नाम।

– बीकानेर (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना